हरिदाससंस्कृतग्रन्थमालासमाख्य-
काशीसंस्कृतसीरीज़पुस्तकमालायाः
८२
छन्दोविभागे (३) तृतीय पुष्पम्

॥ श्रीः ॥

छन्दःकौमुदी

(हिन्दीभाषाटीकासहिता)

(प्रथमापरीक्षापाठ्यर्थनिर्द्धारितछन्दःसंग्रहरूपा)



प्रकाशक—
जयकृष्णदास-हरिदास गुप्तः—
चौखम्बा संस्कृत सीरिज़ आफिस,
विद्याविलासप्रेस, गोपालमन्दिर के उत्तर फाटक,
बनारस सिटी।

१९८७

परीक्षापाठ्य-पुस्तक-सूचीपत्रम् ।

१ लघुसिद्धान्तकौमुदी (वार्त्तिकपाठ-परिभाषापाठ गणपाठ सूत्रानुक्रमणिका-पाणिनीयशिक्षा सहिता) पं० श्रीकनकलाल शर्म्मणा विरचितया संक्षिप्त बालबोधिन्या टीकया संवलिता । उत्तमसंस्करण ॥।)

मध्यम संस्करण ॥=)

२ सारस्वतम् । बृहदटिप्पणी सहितम् । पूर्वार्द्धम् । ॥)

३ सिद्धान्तचन्द्रिका । संक्षिप्त बालबोधिनी टीका सहिता । (यन्त्रस्थ)

४ तर्कसंग्रहः । न्यायबोधिनी पदकृत्य विरला टीका त्रयोपेतः । ।=)

५ रघुवंशम् । मल्लिनाथकृत टीका टीप्पणी सहितम् संपूर्णम् । १)

६ रघुवंशम् । अन्वय-व्याख्या-व्याकरण-समास-कोश सारार्थ-भाषार्थ-संक्षिप्तकथा-शिक्षासंग्रहः परीक्षोपयोगिप्रश्नपत्र तथा मल्लिनार्थी टीका सहितम् । १ से ४ सर्गः १।) तथा १ से ५ सर्गः १॥)

७ रघुवंशम् । परीक्षोपयोगि टीका सहितम् ६ से १० सर्ग । (यन्त्रस्थ)

८ छन्दःकौमुदी । हिन्दी भाषा टीका बृहत् भूमिका सहितः । ।=)

९ पञ्चतन्त्रम् । परीक्षोपयोगि टीप्पणी सहितम् । सम्पूर्णम् । ॥=)

१० पञ्चतन्त्रम् । पञ्चमं तन्त्रम् (अपरीक्षित कारकम् ।) परीक्षोपयोगि टिप्पणी तथा भाषा टीका सहितम् । (यन्त्रस्थ)

११ पञ्चतन्त्रम् । परीक्षोपयोगि संस्कृत टीका टिप्पणी सहितम् संपूर्णम् । (यन्त्रस्थ)

१२ पञ्चतन्त्रम् । परीक्षोपयोगि हिन्दी भाषा टीका सहितम् । ,, (यन्त्रस्थ)

१३ मूलरामायण-भारतीयशीलनिरुपणाध्याय सहितः । अन्वय-व्याख्या-समास-व्याकरण वाच्य-परिवर्तन-कोश-सारार्थ-भाषार्थ-परीक्षोपयोगि प्रश्नसंग्रह सहित । ।=)

१४ गणितकौमुदी । हिन्दी भाषा टीका सहिता । ।=)

१५ मध्यसिद्धान्तकौमुदी । संक्षिप्त बालबोधिनी टीका सहिता । (यन्त्रस्थ)

१६ किरातार्जुनीयम् । परीक्षोपयोगि अन्वय-व्याख्या-समास-व्याकरण वाच्यपरिवर्तन-कोश-सारार्थ-भाषार्थ-मल्लिनाथ टीका तथा प्रश्नपत्र संग्रह सहितम् । १ से ३ सर्गः ॥।)

१७ सिद्धान्तकौमुदी । मूलमात्र गुटका दशपाठ संग्रह सहित । ३)

१८ सिद्धान्तमुक्तावली । पं० सूर्यनारायण शुक्ल रचित मयूख सहिता प्रत्यक्षखंड ॥=)

,, सिद्धान्तमुक्तावली । ,, ,, ,, शब्दखंड (यन्त्रस्थ)

,, ,, ,, ,, अनुमान खंड(,,)

THE

KASHI SANSKRIT SERIES

(*HARIDAS SANSKRIT GRANTHAMALA*)

NO. 82.

(Chhanda Section No. 3)

THE

CHHANDAH KAUMUDI

With

Sanskrit Text and Hindi Commentary

COMPOSED AND EDITED

By

SÂHITYÂ CHÂRYA

PANDIT NÂRÂYAN S'ÂSTRI KHISTE

Assistant Librarian, Government Sanskrit College,
Saraswati Bhawan Library, Benares.

PRINTED-PUBLISHED & SOLD BY

JAI KRISHNADAS-HARIDAS GUPTA

The Chowkhamba Sanskrit Series Office, Vidya Vilas Press,
North of Gopalmandir, Benares City.

1930.

Printed-Published & sold by
JAI KRISHNADAS-HARIDAS GUPTA,
The Chowkhamba Sanskrit Series Office,
VIDYA VILAS PRESS,
North of Gopal Mandir,
BENARES CITY.

Printed by Jai Krishna Das Gupta
at the Vidya Vilas Press. Benares,

हरिदाससंस्कृतग्रन्थमालासमाख्य-
काशीसंस्कृतसीरीज़पुस्तकमालायाः
८२
छन्दोविभागे (३) तृतीय पुष्पम् ।

॥ श्रीः ॥

छन्दःकौमुदी

(हिन्दीभाषाटीकासहिता)

(प्रथमापरीक्षापाठ्यनिर्द्धारितछन्दःसंग्रहरूपा)

काशीस्थराजकीय सरस्वतीभवनपुस्तकालयोपाध्यक्षेण
साहित्याचार्येण खिस्ते-इत्युपाख्य
नारायणशास्त्रिणा प्रणीता ।
तेनैव सम्पादिता च ।

प्रकाशक—
जयकृष्णदास-हरिदास गुप्तः—
चौखम्बा संस्कृत सीरिज़ आफिस,
विद्याविलासप्रेस, गोपालमन्दिर के उत्तर फाटक,
बनारस सिटी ।

१९८७

छन्दःकौमुदी का उपोद्घात।

यह 'छन्दःकौमुदी' नामका ग्रन्थ बनारस गवर्नमेण्ट कॉलिजकी प्रथमा परीक्षा देनेवाले विद्यार्थियोंके उपकारार्थ बनाया गया है। पहिले 'श्रुतबोध' से ही काम चलाया जाता था, किन्तु उसमें बहुतसे अश्लील विशेषणोंके रहनेके कारण कोमल बुद्धिके छात्रों पर उसका दुष्परिणाम होनेकी सम्भावना देखकर अधिकारियोंने श्रुतबोध को परीक्षापाठ्यक्रमसे हटा दिया, और उसके स्थानपर कुछ आवश्यक छन्द तथा अनेक इतर अवश्यज्ञातव्य विषयोंको रखकर छन्दोंके अग्राम्य तथा अनश्लील लक्षणोदाहरणोंका अभ्यास करनेकी सूचना प्रकाशितकी। छात्रोंके लिये भिन्न २ ग्रन्थोंसे अग्राम्य तथा अनश्लील लक्षणोदाहरणोंका सङ्ग्रह करना बहुत कठिन है, यह सोचकर मैंने यह 'छन्दःकौमुदी' नामक छन्दःसङ्ग्रह प्रस्तुत किया है।

इसमें प्रथम परीक्षा पाठ्यक्रममें निर्दिष्ट सभी छन्द उसी क्रमसे दिये गये हैं, और इतर अपेक्षित विषयोंका भी सोपपत्तिक विवेचन किया गया है। लक्षणोंमें श्रुतबोधके लक्षणोंका अश्लीलांशमात्र परिवर्त्तन कर दिया है, शेष लक्षण यथा पूर्व ही रक्खे गये हैं, तथा, पिङ्गलसूत्र, वृत्तरत्नाकर, और छन्दोमञ्जरीके भी लक्षण रक्खे हैं। श्रुतबोधके लक्षणोंमें ही उदाहरणोंका समन्वय दिखाया है। जिस ग्रन्थसे जहां पर जो लक्षण लिया गया है, वहां पर उस ग्रन्थका नामोल्लेख भी कर दिया है। मूल संस्कृत की हिन्दीमें भाषा टीका भी बनायी है।

कतिपय इतर पुस्तक प्रकाशकों ने भी इस तरहका प्रयत्न किया है, परन्तु उनके प्रयत्नमें, और हमारे प्रयत्नमें क्या विशेष है? विद्यार्थियोंका अधिक उपकार किस से होगा? इन प्रश्नोंका उत्तर देना मुझे उचित नहीं मालूम पड़ता, विद्यार्थिवर्ग स्वयं ही अपने अनुभवसे इसका उत्तर देंगे और वही उत्तर यथार्थ होगा।

अब प्रस्तुत विषय, अर्थात् छन्दःशास्त्रके बारे में कुछ आवश्यक बाते संक्षेपमें कहता हूं।

छन्दः शास्त्रका सामान्य स्वरूप

सामान्यतः विचार करनेसे संस्कृत वाङ्मयका बाह्यस्वरूप दो प्रकारका है। १ एक अनियंत्रित अक्षररचनात्मक, और २ दूसरा नियन्त्रित अक्षररचनात्मक। प्रथम प्रकार 'गद्य' नामसे प्रसिद्ध है, और द्वितीय प्रकार 'पद्य' नामसे प्रसिद्ध है। संस्कृत वाङ्मयमें जिस प्रकार उच्चारणनियमन शिक्षाशास्त्रसे, शब्दनियमन, व्याकरणशास्त्रसे, और वाक्यनियमन साहित्यशास्त्रसे किया जाता है, उसी प्रकार अक्षरनियमन छन्दःशास्त्रसे किया जाता है। व्याकरण, साहित्य, आदि शास्त्रोंके अपेक्षया छन्दः शास्त्रमें यह विशेष है कि छन्दःशास्त्रका विषय संस्कृत भाषान्तर्गत पद्यमात्र ही है, व्याकरण साहित्यादि शास्त्रोंका विषय सारी संस्कृत भाषा है।

छन्दः शास्त्रमें जो अक्षरोंका नियमन कहा गया है, वह किस प्रकारका है, यह संक्षेपमें दिखाता हूं। अक्षर कहनेसे स्वर सहित व्यञ्जन, किं वा केवल स्वर समझा जाता है, छन्दःशास्त्रमें केवल व्यञ्जनका कुछ भी महत्त्व नहीं है। अक्षरोंमें ह्रस्व (लघु) और दीर्घ (गुरु) दो भेद हैं। ह्रस्व अक्षरकी एक मात्रा, और दीर्घ अक्षरकी दो मात्रायें मानी जाती हैं। मात्राका तात्पर्य उच्चारण काल विशेषसे है। ह्रस्व अक्षरके उच्चारणमें जो काल लगता है, उसको एकमात्रिक काल कहते हैं, और इसीलिये ह्रस्व अक्षरकी एक मात्रा मानी जाती है। यही प्रकार दीर्घ अक्षरके लिये है। दीर्घ अक्षरके उच्चारणकालको द्विमात्रिक काल कहते है, तथा दीर्घ अक्षरकी दो मात्रायें मानी जाती हैं। संयुक्त अक्षरसे पहिला अक्षर, अथवा अनुस्वार विसर्ग युक्त अक्षरभी द्विमात्रिक माना जाता है, दीर्घ अक्षरके समान उसकी भी दो मात्रायें मानी जाती हैं, किन्तु उसे दीर्घ न कह कर गुरु कहते हैं। उसी तरह, ए, ऐ, ओ, औ, ये स्वर दीर्घ होने पर भी कहीं कहीं पर भाषा छन्दोंमें शीघ्रोच्चारण में एकमात्रिक माने जाते हैं, किन्तु ह्रस्व नही कहे जाते।

तात्पर्य यह है कि छन्दःशास्त्रमें ह्रस्व, दीर्घ संज्ञाओंके अपेक्षया लघु, गुरु ये संज्ञायें ही अधिक उपयुक्त है।

अब अक्षरों का नियन्त्रण किं स्वरुप है, यह देखना चाहिये। अक्षरोंका नियन्त्रण, अर्थात् लघु-गुरुओंका एक विशिष्टक्रम, अथवा, कुछ विशिष्ट अक्षरोंकी संख्या, किं वा मात्रा संख्या है। निष्कर्ष यह हुआ कि, अक्षरोंकी कुछ विशिष्ट संख्यासे, लघु गुरु क्रमसे, और मात्रासंख्यासे अक्षरोंका नियमन होता है। संस्कृत छन्दोंमें ये ही उक्त तीन प्रकार है। भाषान्तरोंके छन्दोंमें और भी कुछ प्रकार होते हैं, उनके बारे में यहां कुछ कहना अनवसर है।

छन्दः शास्त्र प्रणेताओंका सम्प्रदाय क्रम

यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि सारे जगतमें सबसे पहिले छन्दः शास्त्रका उदय भारतवर्षमें ही हुआ है। क्योंकि पाश्चात्य विद्वानोंके ही मतानुसार जगतका सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद जब छन्दोबद्ध देख पड़ता है, तब छन्दः शास्त्रका उदय सबसे पहिले भारतवर्षमें ही मानना चाहिये। अब यह विचार करना है कि इस छन्दः शास्त्रका आद्य प्रणेता कौन है ?

वेदके षडंगों में जो छन्द भी एक अङ्ग कहा गया है, उसके प्रणेता पिङ्गल हैं, किन्तु वे ही सबसे प्रथम आचार्य हैं यह कहना भी कठिन है, क्योंकि पिङ्गलने अपने सूत्रोंमें सैतव, काश्यप, आदि अनेक ऋषियों का उल्लेख किया है, अर्थात् पिङ्गलके पूर्व उक्त ऋषियोंका भी छन्दः सम्प्रदाय प्रचलित था, यह मानना प्राप्त है।

वर्तमान कालमें छन्दः शास्त्र पर जितने ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उन सबसे प्राचीन पिङ्गल सूत्र ही है। अग्निपुराण, और भरतके नाट्य शास्त्रमें भी छन्दोंके बारे में कुछ कहा गया है, किन्तु 'वे ग्रन्थ पिङ्गलसूत्रसे प्राचीन है' ऐसा कहना

कदाचित् साहसप्राय ही होगा । सिवाय इसके अग्निपुराण और भरतनाट्य शास्त्रमें छन्दोंके बारे में जो विचार किया है, वह सर्वाङ्ग पूर्ण नहीं है, जैसे कि पिङ्गलसूत्रमें हैं, इसलिये छन्दःशास्त्रका प्राचीन निबन्ध कहलाने योग्य पिङ्गलसूत्र ही हो सकता है, न कि, अग्निपुराण, और भरतनाट्यशास्त्र ।

इस समय छन्दःशास्त्रके जितने ग्रन्थ उपलब्ध हैं, प्रायः वे सभी पिङ्गल छन्दः सूत्रके आधारपर उसी प्रणाली से बने हुए हैं । और उन ग्रन्थोंको बनाने वालोंने भी पिङ्गल ही को छन्दः शास्त्रका प्रवर्तक माना है ।

छन्दः सूत्रकार पिङ्गलके नामसे 'प्राकृतपिङ्गल' नामक ग्रन्थ भी प्रसिद्ध है, परन्तु 'प्राकृतपिङ्गल' ग्रन्थ छन्दःसूत्रकार पिङ्गलका ही बनाया हुआ है ऐसा कहने के लिये पर्याप्त प्रमाण नहीं है । यदि थोड़ी देरके लिये यह मान लिया जाय कि पिङ्गलने ही 'प्राकृतपिङ्गल' बनाया है, तो 'प्राकृतपिङ्गल' का बहुतसा अंश प्रक्षिप्त है ऐसा मानना पड़ेगा । इस विषयमें बहुत मतभेद है, हम इस विवादमें पड़ना नहीं चाहते, हमको केवल इतना ही विचार करना है कि उपलब्ध ग्रन्थोंमें छन्दःशास्त्रका सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ कौन है ? हमारे मतसे छन्दःशास्त्रके उपलब्ध ग्रन्थोंमें सबसे प्राचीन ग्रन्थ पिङ्गलका छन्दः सुत्र ही है । इस ग्रन्थमें वैदिक और लौकिक छन्दोंका निरूपण कर मात्रा, गण, यति, गुरु, लघु, इत्यादि विषयोंका सुन्दर विवेचन किया है, और प्रस्तार, नष्ट, उद्दिष्ट, आदि छन्दःशास्त्रोपयोगी सभी विषयोंका अच्छी तरहसे विचार किया गया है । इसलिये इस ग्रन्थको विद्वानोने वेदके षडंगोंमें परिगणन कर जो उच्चस्थान दिया सो योग्य ही हुआ । 'यादवप्रकाश' नामकी छन्दः सूत्रकी एक टीका है, उसके आरम्भके एक श्लोकमें छन्दःशास्त्रके आचार्योंका क्रम दिया गया है । वह इस प्रकार है—

छन्दः शास्त्रके सबसे प्रथम आचार्य देवाधिदेव महादेव हैं, उनसे देवोंके राजाको यह शास्त्र मिला, उससे दुश्च्यवनको, दुश्च्यवनसे सुरगुरुको, सुरगुरु से माण्डव्य ऋषिको, माण्डव्यसे सैतवको, सैतवसे यास्कको, यास्कसे पिङ्गलको, और पिङ्गलसे सारे जगत को यह शास्त्र मिला ।

इस प्रकार पिङ्गलके पूर्ववर्त्ती आचार्योंका क्रम दिया गया है । जो लोग पिङ्गलको ही सबसे प्राचीन आचार्य कहते हैं वे निःसंशय भ्रान्त हैं ।

छन्दःशास्त्रका विशिष्ट स्वरूप ।

अब संक्षेपमें छन्दशास्त्रके अन्तरङ्गका भी थोड़ा परिचय कराते हैं । लघु गुरुओंका स्वरूप तो संक्षेपमें पहले ही दिखाया जा चुका है, इन्हीं लघुगुरुओंका विवक्षित अक्षर संख्यामें जो विशिष्ठ क्रम होता है उसीको छन्द कहते हैं । वैदिकवाङ्मयमें इस प्रकारके नियमित अक्षर रचनाके लिये छन्द शब्दका व्यवहार देख पड़ता है । लौकिकवाङ्मयमें इस प्रकारकी रचना पद्य नामसे व्यवहृत होती है । वैदिकवाङ्मयमें छन्दस् शब्दका यौगिकार्थ इस प्रकार है—

छादयन्ति ह्वा एनं छन्दांसि पापात्कर्मणः ।

छादकत्व ही छन्दका सामान्य लक्षण है । मन्त्रतेज छन्दरूप कवचसे अच्छादित रहता है ।

यह वैदिक छन्दोंका छादकत्व अत्यन्त गम्भीर विषय है । इसके विवेचनके लिये एक स्वतन्त्र निबन्ध अपेक्षित है ।

पाणिनीय क्रममें-चन्दयति=आह्लादयति इति छन्दः ।

ऐसी व्युत्पत्ति दी गयी है । दोनों प्रकारकी व्युत्पत्तियां उपयुक्त ही हैं । पद्य शब्दकी भी व्युत्पत्ति इस प्रकार है—

पदं=चरणं अर्हतीति पद्यम् ।

चरणका अर्थ है श्लोकका चतुर्थ भाग । सभी वृत्तोंको रचना इसी प्रकार चार चार चरणोंसे होती है इस लिये वृत्तमात्रको पद्य कहा जाता है ।

पद्यके दो भेद हैं । १ वृत्त और २ जाति । वृत्त गणोंसे नियमित रहता है । और जाति मात्राओं से नियमित होती हैं । तीन तीन अक्षरों का एक एक गण होता है । इन तीन अक्षरोंमें लघुगुरुओंको चाहे जैसे उलट फेरसे रक्खा जाय, उनके आठ ही प्रकार होते हैं इसी लिये 'मयरसतजभन' ये आठही गण माने गये हैं ।

जाति छन्द परिगणित मात्राओंसे ही बनता है, उसमें लघुगुरुक्रमकी अपेक्षा नहीं रहती । इसी लिये जाति और मात्रावृत्त पर्याय शब्द माने जाते हैं ।

वृत्तच्छन्द गणोंसे नियमित रहता है इस लिये उसे गणवृत्त भी कहते हैं । गणवृत्तोंसे मात्रावृत्तकी रचना सरलतासे होती है, क्योंकि उसमें गणोंका तो नियमन है ही नहीं, केवल अभीष्ट मात्राओंका ही संग्रह करना होता है । वसन्ततिलका, मालिनी, हरिणी, इत्यादि गणवृत्त हैं । आर्या गीति आदि मात्रावृत्त हैं ।

गणवृत्त एकाक्षर पादसे लेकर २६ अक्षरके पाद तकके होते हैं । मात्रावृत्तोंमें इस विषयमें कोई नियम नहीं है, तथाऽपि उनमें बारह मात्राओंसे २८ मात्रा तकके पाद देख पड़ते हैं । दोनों प्रकारके वृत्त और जाति छन्दोंमें चार चार चरण होते हैं । इन्हीं चरणोंके प्रतापसे सम, अर्धसम, और विषम इस प्रकारसे पद्योंके तीन भेद होते हैं । जिस पद्यके चारो चरणोंमें गण समानही रहें वह समवृत्त पद्य है, जिसमे पहिले और तिसरे, दुसरे और चौथे चरणों में गण समान हों वह अर्द्धसमवृत्त पद्य है, और जिसमें चारों चरणोंके गण भिन्न २ हों वह विषमवृत्त पद्य है ।

जाति, अर्थात् मात्रावृत्त प्रायः अर्धसम अथवा विषम रहते हैं । गणवृत्तोंमें वसन्ततिलकादि वृत्त सम होते हैं । पुष्पिताग्रा, वियोगिनी आदि अर्धसम है । वक्त्र पथ्यावक्त्र आदि विषम हैं ।

पद्य ... होते हैं, यह पहिले कह चुके हैं । किस गणका क्या स्वरूप

है यह ग्रन्थारम्भमें स्पष्टरूपसे दिखाया गया है, अतः यहां पर उसका निरूपण पिष्टपेषण होगा।

गणोंके स्वरूप ध्यानमें लानेके लिये एक नवीन सरल प्रकार यहां दिखाते हैं—"यमाताराजभानसलगम्" यह सूत्र कण्ठस्थ करना चाहिये।

जिस गणका स्वरूप जाननेकी इच्छा हो, उस गणका वाचक प्रथमाक्षर लेकर उसके आगेके दो अक्षर पढ़नेसे उस गणका स्वरूप बन जायगा।

उदाहरण—जैसे—हम 'यगण'का स्वरूप जानना चाहते हैं, तो सूत्रमें का पहिला अक्षर 'य'से आगे दो अक्षर 'माता' मिलानेसे 'यमाता' हुआ यही यगणका आदि लघु मध्यान्तगुरु स्वरूप बन गया। इसी प्रकार 'मगण' का स्वरूप जानना हो तो 'मातारा' मिलानेसे त्रिगुरु मगण बन गया। तगणका 'ताराज,' रगणका 'राजभ' इत्यादि।

यति = अथवा विराम।

अब यतिके विषयमें संक्षेपसे कहते हैं—

पद्य कहते हुए जहां पर जिह्वाको विश्रान्ति देना आवश्यक होता है, उस स्थानको यतिस्थान कहते हैं। "यतिर्जिह्वेष्टविश्रान्तिः" यह यतिका सामान्य लक्षण है। यतिस्थानमें पदभङ्ग होना दोष माना जाता है। क्योंकि उससे अर्थानुसन्धानमें प्रतिबन्ध होता है। इस दोषको यतिभङ्ग कहते हैं। यतिस्थानमें पदैकदेश होनेसे वहां विश्रान्ति ले नहीं सकते, यदि विश्रान्ति लें, तो पदभङ्ग होकर अर्थानुसन्धान बिगड जाता है। काव्योंमें अर्थानुसन्धानही प्रधान होनेसे पदभङ्गका होना इष्ट नहीं है, अतः सम्पूर्ण पदका ही उच्चारण करना पड़ता है, वैसा उच्चारण करनेसे पद्यमें के विश्रान्तिस्थान = यतिका भङ्ग होता है।

जैसे—नमस्तस्मै महादेवा—य शशङ्कार्धधारिणे। इत्यादि।

यतिभङ्गके अनेक प्रकार है। ग्रन्थारम्भमें थोड़ा दिग्दर्शन किया है। विस्तार भयसे यहां उसका विवेचन छोड़ देते हैं। सामान्याकारसे छन्दःशास्त्रकी प्रक्रिया जाननेके लिये इतना पर्याप्त है।

छन्दःशास्त्रीय ग्रन्थोंका स्वरूप।

छन्दः शास्त्र पर जो सैंकड़ों ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उनकी रचनाप्रणाली देखते हुए यह मानना पड़ेगा कि छन्दः शास्त्रीय ग्रन्थोंकी रचना ४ चार प्रकारकी है।

१ एक सूत्रात्मक। जैसे पिङ्गल सूत्रमें "तनुमध्या त्यौ" इत्यादि। इस रचनामें संक्षेपसे वृत्तका नाम और गणोंकी संस्था दिखायी है।

२ दूसरी पौराणिक। जैसे अग्निपुराण, भरतनाट्यशास्त्र आदि आर्ष ग्रन्थोंमें—

मकारयुगपर्यन्ते यत्संयुक्तं गुरुद्वयम्।
विद्युन्मालाभिधं तद्धि वृत्तमष्टाक्षरं विदुः॥

इस रचनामें अनुष्टुब् आदि वृत्तमें पुराणके समान छन्दोंका नाम और लक्षण दिखाया है । इस लिये इस रचनाको पौराणिक कहा गया है । यही प्रकार 'सुवृत्त तिलक' में भी है ।

३ तीसरी वृत्तानुसारिणी । जैसे—वृत्तरत्नाकर छन्दोमञ्जरी आदि ग्रन्थोंमें वृत्तोंके नाम और लक्षण उसी वृत्तमें दिखाये हैं । " वक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः " इत्यादि ।

४ चौथी अक्षरानुसारिणी । अर्थात् जिसमें अक्षरोंको प्रधान मानकर तदनुसार-वृत्तोंका लक्षण किया हो । जैसे कालिदासका श्रुतबोध । इसमें, किस वृत्तमें कितने अक्षर लघु और कितने गुरु हैं इसीका हिसाब लगाकर लक्षणोंकी रचना उसी वृत्त-में की है ।

छन्दः शास्त्रके सम्पूर्ण ग्रन्थ इन्हीं चार विभागोंमें विभक्त किये जा सकते हैं ।

स्थलविशेषमें वृत्तविशेषकी योजना ।

किस वृत्तकी कहां योजना करना ? कौन वृत्त किस रसके उपयुक्त है ? इत्यादि विषयोंका विचार मुख्यतः साहित्यशास्त्रमें हैं । क्षेमेन्द्रने अपने "सुवृत्ततिलक" नामक ग्रन्थमें इस विषयका विचार किया है । जैसे—शास्त्रीयप्रबन्ध, उपदेशप्रधान पौराणिक कथा आदि अनुष्टुब् छन्दमें ही कहना चाहिये । शृङ्गारके लिये उपजाति, चन्द्रो-दयादि वर्णनोंमें रथोद्धताकी योजना करना । वीर, रौद्र आदि रसोंके लिये बसन्त-तिलका, आक्षेप धिक्कार दिखानेके लिये पृथ्वी, राजपराक्रमादिवर्णनके लिये शार्दूल बिक्रीडित उपयुक्त है ।

इस प्रकारसे संक्षेपमें छन्दः शास्त्रके प्रायः सभी अङ्गोंका दिग्दर्शन कराया गया है । मैं आशा करता हूं कि इससे जिज्ञासुओंका कुछ उपकार अवश्य होगा ।

दूधबिनायक काशी ।
संवत् १९८७

नारायणशास्त्री खिस्ते ।

छन्दःकौमुद्यां विषयसूची ।

हरिदास संस्कृत सीरिज ।

१ पाणिनीयशिक्षादिसंग्रहः । अर्थात् पाणिनीयशिक्षा भाष्यसहिता, अष्टाध्यायीसूत्रपाठः, गणपाठः, वार्त्तिकपाठः, धातुपाठः, परिभाषापाठः, लिङ्गानुशासन, उणादिसूत्रपाठः, फिट्सूत्रपाठः, नवाह्निकभाष्यवार्त्तिकपाठश्चेतद्दशपाठसंग्रहात्मकोऽयं ग्रन्थः मूल्यम्–०–८–०

२ लघुसिद्धान्तकौमुदी। संक्षिप्त बालबोधिनी टीका सहिता (वार्त्तिकपाठ-परिभाषापाठ-धातुपाठ-गणपाठ-सूत्रानुक्रमणिका-पाणिनीयशिक्षासहिता)
राजसंस्करण १) उत्तमसंस्करण ०–१२–०
मध्यमसंस्करण ०–१०–०

३ शब्दरूपावलिः । (शतशब्दा) अर्थात् १०० संख्यक शब्दानां-रूपाणि । ,, ०—२–०

४ सारस्वतम् । सटीप्पण पूर्वार्द्धम् । ,, ०—८–०

५ पूर्वपक्षावली । सपरिष्कृता । ,, ०—३–०

६ वेदान्तपरिभाषा । धर्मराजाध्वरीन्द्रकृता । शिवदत्तपण्डितकृतार्थदीपिकाटीका सहिता । वेदान्ताचार्य भट्ट त्र्यम्बकरामशास्त्रिकृत विषमस्थलाववोधिन्या बृहट्टीपण्या समेता । मूल्यम् १–४–०

७ श्रुतबोधः । महाकवि श्रीकालिदासविरचितः । पं० श्री कनकलाल शर्म्मणा (मैथिलेन) विरचितया परीक्षोपयोगिन्या विमलाख्यया संस्कृत टीकया भाषाटीकया च समलंकृतः । मूल्यम् ०–३–०

८ पुष्टिमार्गीयस्तोत्ररत्नाकरः । पुरुषोत्तमनामसहस्त्रषोडसग्रन्थसर्वोत्तमस्तोत्रप्रभृति (८५) स्तोत्रग्रन्थसमूहात्मकः । मूल्यम् ०–१२–०

९ कर्पूरस्तवः । श्रीमहाकालप्रणीतः । पण्डितराजरङ्गनाथ विद्वद्भिरचित दीपिकाख्यटीकया, तथा साहित्याचार्य पण्डित नारायणशास्त्रि खिस्ते-कृत-परिमल नामिकया टीकया च समन्वितः । मूल्यम् ०–६–०

१० पाणिनीयशिक्षा । पञ्जिकाभाष्यसहिता । मूल्यम् ०–२–०

११ वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी । (गुटका) श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितप्रणीता । सभाष्यशिक्षाऽष्टाध्यायीगणवार्तिकधातुपरिभाषोणादिसूत्रफिट्सूत्रलिङ्गानुशासनसूत्रपाठैः अष्टाध्याय्याद्यष्टकाकाराद्यनुक्रमसूचिभिः संवलिता । मूल्यम् ३–०–०

सर्वविधपुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय,

बनारस सिटी।

* श्रीः *

छन्दःकौमुदी

गणनाथं प्रणम्यादौ वाणीं वीणाविशारदाम् ।
रेणुकां करुणापूर्णापाङ्गवर्द्धितवैभवाम् ॥ १ ॥
प्रणम्य पितरं भक्त्या भैरवं वैरिभैरवम् ।
छन्दसां कौमुदीमेनां सङ्गृह्णामि सतां मुदे ॥ २ ॥
श्रुतबोधे निबद्धानि प्रायस्तान्यपराणि च ।
छन्दांसि विषयैरन्यैरुच्यन्ते प्रकृतैः सह ॥ ३ ॥
परीक्ष्यच्छात्रवृन्दस्य हितायाऽसौ ममोद्यमः ।
सदयाः सन्तु सन्तोऽत्र छन्दःसागरपारगाः ॥ ४ ॥

ग्रन्थके आरम्भमें, श्रीगणेशजीको, वीणाबजानेमें कुशला श्री-सरस्वतीजीको, तथा अपने करुणाकटाक्षोंसे भक्तोंके वैभवकी वृद्धि करनेवाली श्रीरेणुकादेवीको प्रणामकर ॥ १ ॥

वैरियों के लिये भयङ्कर ऐसे अपने पिता "श्रीभैरव" को भक्ति-पूर्वक प्रणामकर सज्जनोंके सन्तोषार्थ इस **छन्दःकौमुदी**को सङ्गृहीत करताहूँ ॥ २ ॥

श्रुतबोध नामक ग्रन्थमें उद्धृत छन्द, प्रायः वे ही कुछ और भी छन्द, इतर अवश्यज्ञातव्य विषयोंके साथ इस ग्रन्थमें वक्तव्य हैं॥ ३॥

काशिस्थराजकीयसंस्कृतपाठशालीयप्रथमापरीक्षा-देनेवाले छात्रोंके हितके लिये ही मेरा यह उद्योग है। छन्दोरूपीसमुद्रके पारगामी सज्जनगण इस ग्रन्थपर दयादृष्टि रखें ॥ ४ ॥

तत्र प्रथमं छन्दोविज्ञानसम्प्रदायक्रममाह—

यथोक्तं यादवप्रकाशाऽभिधायां छन्दःसूत्रटीकायाम्—

छन्दोज्ञानमिदं भवाद् भगवतो लेभे सुराणां पतिः
तस्माद् दुश्च्यवनस्ततः सुरगुरुर्माण्डव्यनामा ततः ।

माण्डव्यादपि सैतव स्तत ऋषिर्यास्कस्ततः पिङ्गल-
स्तस्येदं यशसा गुरोर्भुवि धृतं प्राप्याऽस्मदाद्यैः कृतम् ॥ १ ॥

श्रीभगवान् देवाधिदेव महादेव तो "ईशानः सर्वविद्यानाम्" इत्यादि श्रुतियोंके अनुसार सभी विद्याओंके अधिपति है, अतः छन्दः-शास्त्रके भी मूलप्रवर्त्तक वेही है, उनसे इस शास्त्रका ज्ञान देवोंके राजा इन्द्रको मिला। इन्द्रसे दुश्च्यवनको, दुश्च्यवनसे बृहस्पतिको, बृहस्पतिसे माण्डव्यको, माण्डव्यसे सैतवको, सैतवसे यास्क ऋषिको। यास्कऋषिसे पिङ्गलको मिला। पिङ्गलाचार्यनेही सूत्रद्वारा उसको ग्रथित किया। उसीके आधारपर परवर्त्ती सभी ग्रन्थकारोंका प्रयत्न हैं। हमलोगोंकी ग्रन्थरचनाभी उसीके आधारपर है ॥

छन्दोद्वैविध्यं दर्शयति—

मात्रावर्णविभेदेन छन्दो द्विविधमुच्यते।
विधां तृतीयामप्याहुरक्षरच्छन्दसा परे ॥ २ ॥

छन्द दो प्रकारका होता है। १ मात्राछन्द, और २ वर्णच्छन्द। किसी किसीके मतमें १ गणच्छन्द २ मात्राच्छन्द, और ३ अक्षरच्छन्द इसप्रकार तीन विभाग हैं, किन्तु जब हम गणच्छन्द न कहकर वर्णच्छन्द कहते हैं तब वर्णमें गण और अक्षर दोनों का सङ्ग्रह होता है। इसलिये तृतीय अक्षरच्छन्द माननेकी कुछ आवश्यकता नहीं है ॥

गणानाह—

मगणो यगणश्चैव रगणः सगणस्तथा।
तगणो जगणश्चैव भगणो नगणस्तथा ॥ ३ ॥
गुरुर्लघुश्च दशभिरेभिः सर्वमिहाक्षरैः।
सुव्याप्तं भुवनं भाति वामनेनेव विष्णुना ॥ ४ ॥

गणस्वरूपमाह—

यथा छन्दोमञ्जर्याम्—

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥५॥

वक्ररेखा गुरोश्चिह्नं सरलाच लघोस्तथा ।
गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेककः ॥ ६ ॥

१ मगण २ यगण ३ रगण ४ सगण ५ तगण ६ जगण ७ भगण ८ नगण ९ गुरु, और १० लघु इन दस अक्षरोंसे सम्पूर्ण भुवन भरा हुआ है । अर्थात् भाषामें, बोलचालमे, शास्त्रोंमें, वेदोंमें, पुराणोंमें, सर्वत्र जो कुछ कहा गयाहै, अथवा कहा जाताहै वह सब इन गणोंमें अथवा केवल गुरुलघुमें आही जाताहै, इसीलिये कहाहै कि सारा जगत् इसीसे भरा हुआहै, जैसे वामनवतारमें श्रीभगवान्से त्रैलोक्य व्याप्त हुआ । ३ । ४ ।

छन्दोमञ्जरीग्रन्थके अनुसार गणोंका स्वरूप—जिसमें तीनों गुरु हों वह मगण, जिसमें तीनों लघुहों वह नगण, जिसमें आदिगुरु और दो लघुहों वह भगण, जिसमें आदिलघु और दो गुरु हो वह यगण, जिसमें मध्यमें गुरु, और आदि अन्तमें लघुहों वह जगण, जिसमें मध्यमें लघु और आदि अन्तमें गुरुहों वह रगण, जिसमें अन्तमे गुरु और आदि मध्यमे लघुहो, वह सगण, जिसमें अन्तमें लघु और आदि मध्यमें गुरुहों वह तगण है ॥ ५ ॥

वक्ररेखा गुरुका चिह्न है, तथा सीधी रेखा लघु का चिह्न है ।

एक गुरु होनेसे ग सञ्ज्ञा है, तथा एक लघु होनेसे ल सञ्ज्ञा होती है ॥ ६ ॥

अथैषां गणानां विन्यासप्रकारमाह—

मगणः	यगणः	रगणः	सगणः	तगणः	जगणः	भगणः	नगणः
SSS	ISS,	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	III

गुरुः S लघुः । इति ।

गणोंके लिखनेका प्रस्तार उपरि लिखितानुसार है ।

अथैषां गणानां देवताः फलानि चाह—

यथोक्तमभियुक्तैः—

मो भूमिस्त्रिगुरुः श्रियं दिशति, यो वृद्धिं जलं चादिलो,
रोऽग्निर्मध्यलघुर्विनाशमनिलो देशाटनं सोऽन्त्यगः ।

तो व्योमान्तलघुर्धनापहरणं, जोऽर्को रुजं मध्यगो,
भश्चन्द्रो यश उज्ज्वलं मुखगुरु र्नो नाक आयुस्त्रिलः ॥ ७ ॥

अथ यदि दैवाद्दुष्टफलो गणः काव्यादौ कृतः तदा तद्रक्षणार्थं द्वितीयो गणः शोध्यः । तत्र मगण-नगणौ मित्रसञ्ज्ञौ, भगण-यगणौ भृत्यौ, जगण-तगणावुदासीनौ, रगण-सगणावरी नीचौ च । तदुक्तम्—

म-नौ मित्रे भ-यौ भृत्यावुदासीनौ ज-तौ स्मृतौ ।
र-सावरी नीचसञ्ज्ञौ द्वौ द्वावेतौ मनीषिभिः ॥ ८ ॥ इति ।

अब गणोंकी देवता और फल कहते है—मगणकी भूमि देवता है तीन गुरु उसका स्वरूप है और लक्ष्मीलाभ फल है । यगणकी जलदेवता वृद्धिफल, और आदिलघु मध्यान्तगुरु स्वरूप हैं । रगणकी अग्नि देवता, विनाश फल, आद्यन्तगुरु और मध्यलघु स्वरूप है । सगणकी वायुदेवता, विदेशगमन फल, अन्त्यगुरु और आदिमध्यलघु स्वरूप है । तगणकी आकाश देवता, धनहानिफल, अन्तलघु और आदिमध्यगुरु स्वरूप है । जगणकी देवता सूर्य रोग फल मध्यगुरु और आद्यन्तलघु स्वरूप है । भगणकी देवता चन्द्र, सुकीर्तिफल, आदिगुरु और मध्यान्तलघु स्वरूप है । नगणकी देवता स्वर्ग, आयुष्य फल, और त्रिलघु स्वरूप है ॥ ७ ॥

यदि दैवात् दुष्टफलवाला गण काव्यके आरम्भमें आजाय, तो उसकी रक्षाके लिये द्वितियगण का शोधन करना चाहिये । गणोंमे मगण, और नगण मित्र हैं, भगण और यगण भृत्य हैं, जगण, और तगण उदासीन है । रगण और सगण शत्रु और नीच है । इसमें विशेष ध्यान देने लायक बात यह है कि—वर्ण पद्योंमें अशुभगणका दोष नही माना जाता । केवल मात्रिक छन्द (आर्यादि) के आदिमें ही गणका शुभाशुभफल समझना । देवतावाचकशब्दोंमे गणदोष नही माना जाता ॥ ८ ॥

गणदेवतादिकोष्ठकम् ।

गणनाम	मगणः	यगणः	रगणः	सगणः	तगणः	जगणः	भगणः	नगणः
स्वरूपम्	SSS	ISS	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	III
देवता	पृथ्वी	जलम्	अग्निः	वायुः	आकाशः	सूर्यः	चन्द्रः	स्वर्गः
फलम्	श्रीः	वृद्धिः	विनाशः	भ्रमणम्	धननाशः	रोगः	सुयशः	आयुः
मित्रामित्रादि संज्ञा	मित्रम्	भृत्यः	शत्रुः	शत्रुः	उदासीनः	उदासीनः	भृत्यः	मित्रम्

स्पष्टार्थम् ।

इदानीं मात्राच्छन्दःसूपयोगिनो गणानाह—यथोक्तमभियुक्तैः—

ज्ञेयाः सर्वान्तमध्यादिगुरवोऽत्र चतुष्कलाः ।
गणाश्चतुर्लघूपेताः पञ्चार्यादिषु संस्थिताः ॥ ९ ॥

अब मात्राछन्दोंमें उपयोगी गणोंको कहते हैं—इस छन्दः शास्त्रमें आर्या-आदि छन्दोंमें स्थित चतुष्कल, अर्थात् चारमात्रावाले पांच गण होते है । वे गण कहीं तो सर्वगुरु, जैसे SS, (१) कहीं अन्त्यगुरु IIS, (२) कहीं मध्यगुरु ISI, (३) कहीं आदिगुरु SII, (४) कहीं चतुर्लघु IIII (५) इस प्रकार पांच प्रकार के गण होते हैं ॥ ९ ॥

अथेदानीं गुरुं लक्षयति—

यथोक्तमभियुक्तैः—

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः ।
वा पादान्ते त्वसौ ग्वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मात्रिको लृजुः ॥ १० ॥

अब गुरुका लक्षण कहतेहैं-अनुस्वार सहित जो हो, जिसके अन्तमें विसर्ग हो, जो दीर्घ हो, संयुक्तवर्णके पूर्व जो हो, (जैसे-

अं–कं–इत्यादि) (जैसे–अः–कः–आदि) (जैसे–आ–का–आदि) (जैसे विष्णुमे–'वि' आदि) वह गुरु होता है । पादके अन्तमें लघु-वर्णभी विकल्पसे गुरु होता है । जहां लघुत्व अपेक्षित हो वहां लघु समझना, और जहां गुरुत्व अपेक्षित हो, वहां गुरु समझना, वह गुरु वक्र अर्थात् टेढा ऽ लिखा जाताहै । इस गुरु से अन्य एक मात्रा वाला लघु होताहै, जो कि ऋजु अर्थात् सरल । रेखामें लिखा जाताहै ॥ १० ॥

ह्रस्वदीर्घप्लुतादिसंज्ञा आह—यथोक्तमभियुक्तैः—

एकमात्रो भवेद्ध्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्द्धमात्रकम् ॥ ११ ॥

ह्रस्वदीर्घप्लुतादिसंज्ञाओंका विवरण करते हैं—

एकमात्रिक वर्णको ह्रस्व कहते हैं, द्विमात्रिक को दीर्घ, तथा त्रिमात्रिक को प्लुत कहते हैं । स्वररहित केवल व्यञ्जन अर्द्धमात्राका होता है ॥ ११ ॥

इदानीं परिभाषा आह--यथोक्तमभियुक्तैः—

अब्धिभूतरसादीनां ज्ञेयाः संज्ञास्तु लोकतः ।
ज्ञेयः पादश्चतुर्थांशो यतिर्विच्छेदसंज्ञितः ॥ १२ ॥

यतिनियमस्थानानि च वृद्धैः सङ्गृहीतानि यथा—

यतिः सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्धे तु विशेषतः ।
समुद्रादिपदान्ते च व्यक्ताव्यक्तविभक्तिके ॥ १३ ॥
क्वचित्तु पदमध्येऽपि समुद्रादौ यतिर्भवेत् ।
यदि पूर्वापरौ भागौ न स्यातामेकवर्णकौ ॥ १४ ॥
पूर्वान्तवत्स्वरः सन्धौ क्वचिदेव परादिवत् ।
नित्यं प्राक्पदसम्बद्धाश्चादयः प्राक्पदान्तवत् ॥ १५ ॥
परेण नित्यसम्बद्धाः प्रादयश्च परादिवत् ।

अब परिभाषायें कहते है—'सङ्क्षेपेण ज्ञायते इति सञ्ज्ञा' जो सङ्क्षेपसे जानी जाय, वह सञ्ज्ञा है, अब्धि=४ भूत=५ रस=६ आदि क्रमशः ४, ५, ६, की सञ्ज्ञायें हैं । इनका निर्णय लोकव्य-

बहारसेही होता है। एक श्लोक का चतुर्थांश, पाद कहाता है, जहां विच्छेद=विराम हो, उसे यति कहते है।

यति=विराम श्रुतिसौकर्यके लिये माना जाता है, श्रुतिसौकर्यके स्थान वृद्धोंनें इसप्रकार सङ्ग्रह किये हैं—(१) पादके अन्तमें सर्वत्र यति अर्थात् विराम होता है। जैसे—

"अत्र मे सखि ! शिखण्डमण्डने, पुण्डकरीककमनीयलोचने"। जैसे—"श्यामतामरसदामकोमले रामनामनि रमे मनोरमे"॥

श्लोकके आधे भागमे विशेष करके यति होती है। समुद्र शब्द, आदिपदात अद्रि आदि शब्द जहां अन्तमें हों वहां भी विराम होता है। जैसे-'**तस्मिन्नद्रौ** कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी'।

पूर्वोक्तस्थलों में जहां विभक्ति स्पष्ट प्रतीत हों, और जहां अस्पष्ट प्रतीतहो, सर्वत्र पूर्वोक्त नियमानुसार ही यति अर्थात् विराम होता है। इसके उदाहरण देनेसे ग्रन्थ बढ जायगा इसलिये नहीं दिये है। आगेके नियमोंके उदाहरण प्रत्युदाहरण आदिमेंभी अनेक विचारणीय विषय हैं, उन सबका विचार यहां अत्यावश्यक न होनेसे छोडदिया है। केवल सङ्क्षेपमें यति के नियम बता दियेहैं। कुछ उदाहरणोंका भी दिग्द-र्शन कराया है विशेषजिज्ञासु आकरग्रन्थोंमें देखें॥१२,१३,१४,१५॥

समविषमादिपरिभाषाः प्रकटयन्नाह—

यथोक्तमभियुक्तैः—

युक् समं विषमं चायुक् स्थानं सद्भिर्निगद्यते।
सममर्धसमं वृत्तं विषमं च तथा परम्॥ १६॥

तत्र, अङ्घ्रयो यस्य चत्वारस्तुल्यलक्षणलक्षिताः।
तच्छन्दःशास्त्रतत्त्वज्ञाः समं वृत्तं प्रचक्षते॥ १७॥

प्रथमाङ्घ्रिसमो यस्य तृतीयश्चरणो भवेत्।
द्वितीयस्तुर्यवद्वृत्तं तदर्धसममुच्यते॥ १८॥

यस्य पादचतुष्केऽपि लक्ष्म भिन्नं परस्परम्।
तदाहुर्विषमं वृत्तं छन्दःशास्त्रविशारदाः॥ १९॥

वृत्तोंमें सम, अर्द्धसम, विषम, आदि सङ्केतोंको प्रकट करते हैं–जैसे प्राचीनग्रन्थकारोंने इस विषयमें कहा हैं–सम, अर्थात द्वितीय, चतुर्थपाद, को 'युक्' स्थान कहते हैं। विषम, अर्थात् प्रथम, तृतीय पाद को 'अयुक्' स्थान कहते हैं। वृत्त तीन प्रकारका होता है।

समवृत्त, अर्द्धसमवृत्त, और विषमवृत्त। उनमें, जिस वृत्तमें चारों पाद समान हों, अर्थात् न्यूनाधिक न हों, उसको सम वृत्त कहतेहैं। जिस वृत्तमें प्रथम पाद और तीसरा पाद समान हों, और, दूसरा चौथा पाद भी समानहो, उसको अर्द्धसम वृत्त कहते है। जिस वृत्तमें चारो पाद परस्परसे विलक्षण हो, अर्थात् समानलक्षणवाले न हो, उसको छन्दःशास्त्रके जानकार लोग विषमवृत्त कहते है॥ १६, १७, १८, १९॥

तत्र मात्राच्छन्दःसु प्रथमं आर्यालक्षणमाह––यथोक्तं श्रुतबोधे—

यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥ २०॥

मात्राच्छन्दोंमें पहिले आर्यालक्षण कहते है––

जिस वृत्तके प्रथम और तृतीय पादमें १२ बारह बारह मात्राये हों, तथा द्वितीयपादमें १८ अट्ठारह, और चतुर्थपादमें १५ पन्द्रह मात्रायें हो, उस छन्दको 'आर्या' कहते है। पिङ्गलने इसीको 'पथ्या' नामसे कहा है। आर्यामें पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दोनोमें तीनगण अर्थात् बारह मात्राओं पर यति अर्थात् विराम होता है। उदाहरण भी यह श्लोकही है। जैसे––

य स्याः पादे प्रथमे द्वादश मा त्रा स्तथा तृतीयेऽपि।
S S SS II S SII S S IS ISSS
(यतिः) (यतिः)

अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या।
SSIS ISS ISIS SIII S S
(यतिः) (यतिः)

आर्याभेदेषु गीतेर्लक्षणमाह—यथोक्तं वृत्तरत्नाकरे—

आर्याप्रथमदलोक्तं यदि कथमपि लक्षणं भवेदुभयोः ।
दलयोः कृतयतिशोभां तां गीतिं गीतवान् भुजङ्गेशः ॥२॥

पिङ्गलसूत्रे च 'आद्यार्धसमा गीतिः' । इति ।

आर्याके भेदोमें गीति का लक्षण कहते हैं—जैसे कि वृत्तरत्नाकरमे कहा है—

आर्या छन्दके पूर्वार्द्धमें जो लक्षण कहाहै, वही यदि पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध दोनोंमें हों । अर्थात् प्रथमपादमें बारह मात्रा, द्वितियपादमें अठारह मात्रा पूर्वार्द्धके समान उत्तरार्द्धमें भी हों, और आर्याके नियमानुसारही यति, अर्थात् विराम हों तो उसको सर्पराज पिङ्गलनाग 'गीति' कहते हैं ।

उदाहरणभी यही श्लोक है । जैसे—

आर्या प्रथमं दलोक्तं यदि कथमपि लक्षणं भवे दुभयोः ।
S S ।।। ।SS ।। ।।।। S।S ।S ।।S
दलयोः कृतयति शोभां तां गीतिं गीतवान् भुजङ्गेशः ।
।।S ।।।। SS S SS S।S ।SSS

उपगीतेर्लक्षणमाह—यथोक्तं वृत्तरत्नाकरे—

आर्याद्वितीयकेऽर्द्धे यद्गदितं लक्षणं तत्स्यात् ।
यद्युभयोरपि दलयोरुपगीतिं तां मुनिर्ब्रूते ॥ ३ ॥

पिङ्गलसूत्रे च—'अन्त्येनोपगीतिः' इति ।

इति मात्राच्छन्दःप्रकरणम् ।

उपगीतिका लक्षण कहते हैं, जैसे किं वृत्तारत्नाकर में कहा है—

आर्याके उत्तरार्द्धमें जो लक्षण कहा है वही लक्षण यदि पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दोनों में हो, तो उसको पिङ्गलमुनि 'उपगीति' कहते हैं । अर्थात् , प्रथमपादमे बारह मात्रा और द्वितीयपादमे पंदरह-मात्रा इसप्रकार पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दोनो में यदि हो तो उसे "उपगीति" कहते हैं ।

उदाहरण भी यही श्लोक है-जैसे—

आर्या द्वितीयके ऽर्द्धे यद्गदितं लक्षणं तत्स्यात् ।
ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ
यद्युभयोरपि दलयो रूपं गीतिं तां मुनि ब्रूते ।
ऽ । । ऽ । । । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ

इति मात्राच्छन्दःप्रकरणम् ।

अथ वृत्तप्रकरणम् ।

तत्र पञ्चाक्षरवृत्ते पङ्क्तिलक्षणमाह—यथोक्तं श्रुतबोधे—

आद्यचतुर्थं पञ्चमकं चेत् ।
यत्र गुरु स्यात् साऽक्षरपङ्क्तिः ॥ १ ॥

छन्दोमञ्जर्यां वृत्तरत्नाकरे च—"भगौगिति पङ्क्तिः" । इति ।

वृत्त एक अक्षरवाले पादसे आरम्भकर २६ अक्षरवाले पाद तक के होते हैं, उनमें पांच अक्षर के पादवाले पङ्क्ति किंवा अक्षरपङ्क्ति छन्दका लक्षण कहते हैं—जिसमें प्रत्येक पादमें पहिला चौथा और पांचवा अक्षर गुरु हो, उसको पङ्क्ति किं वा अक्षरपङ्क्ति कहते हैं । **वृत्तरत्नाकर** और **छन्दोमञ्जरीमें**—"जिसके प्रत्येक चरणमें एक भगण और दो गुरु वर्ण हो उसे पङ्क्ति कहते हैं" ऐसा लक्षण किया है ।

उदाहरण भी यही है—जैसे—

ऽ ऽऽ ऽ ऽऽ
आद्य चतुर्थं पञ्चमकं चेत् ।
ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ
भगणः गु० गु० भगणः गु० गु०

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ
यत्र गुरुस्यात् साऽक्षरपङ्क्तिः ।
ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ
भगणः गु० गु० भगणः गु० गु०

षडक्षरवृत्ते शशिवदनालक्षणमाह—

अगुरु चतुष्कं भवति गुरू द्वौ ।
कविवरवाच्या शशिवदना ऽसौ ॥ २ ॥

वृत्तरत्नाकरे "शशिवदना न्यौ" इति ।

छ अक्षरके पादवाले वृत्तोंमे शशिवदनाका लक्षण कहते हैं --

जिसके प्रत्येक पादमें पहिले ४ अक्षर लघु और अन्तिम दो गुरु हों, उसको शशिवदना कहते हैं। वृत्तरत्नाकरमें—'जिसके प्रत्येक पाद में एक नगण और एक यगण हो उसे 'शशिवदना' कहते हैं, ऐसा लक्षण किया है ।

उदाहरणभी यही है जैसे—

।।। ।ऽ ऽ	।।। ।ऽऽ
अगुरु चतुष्कं	भवति गुरूद्वौ ।
।।। ।ऽ ऽ	।।। ऽ।।
नगणः यगणः	नगणः यगणः
।।।। ऽ ऽ	।। ।।ऽ ऽ
कविवर वाच्या	शशि वदनाऽसौ।
।।।।ऽ ऽ	।। ।।ऽ ऽ
नगणः यगणः	नगणः यगणः

सप्ताक्षरवृत्ते मदलेखालक्षणमाह—

तुर्यं पञ्चमकं चेद्यत्र स्याल्लघु वृत्ते ।
वृत्तज्ञैर्विबुधेन्द्रैः प्रोक्ता सा मदलेखा ॥ ३ ॥

वृत्तरत्नाकरे "म्सौ गः स्यान्मदलेखा" इति ।

सात अक्षर के पादवाले वृत्तों में मदलेखा का लक्षण कहते हैं—

जिस सप्ताक्षर वृत्तके प्रत्येक पाद मे चतुर्थ और पञ्चम अक्षर लघु और शेष सब गुरु हों, वृत्तों के जानकार पण्डित श्रेष्ठों नें उस वृत्तको 'मदलेखा' कहा है । वृत्तरत्नाकरमें —'जिसके प्रत्येक पाद मे एक मगण, एक सगण, और एक गुरु, इस प्रकार सात अक्षर हों वह 'मदलेखा' है ऐसा कहा है ।

उदाहरण भी यही है । जैसे—

	लँ० लँ०		लँ० लँ०
ऽऽ	ऽ। ।ऽ	ऽऽऽ	ऽ। ।ऽऽ
तुर्यं	पञ्चमकं	चेद्यत्र	स्याल्लघुवृत्ते ।
वृत्तज्ञै	र्विबुधेन्द्रैः	प्रोक्तासा	मदलेखा
ऽऽऽ	।।ऽऽ	ऽऽऽ	।ऽऽ
मगणः	सगणः गुरुः	मगणः	सगणः गुरुः

अष्टाक्षरवृत्ते ऽनुष्टुप्भेदश्लोकलक्षणमाह—यथोक्तं श्रुतबोधे—

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पादयो ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥ ४ ॥

इयानत्र विशेषः—

अष्टाक्षरपादवन्ति सर्वाणि छन्दांसि 'अनुष्टुब्' इत्युच्यन्ते । परन्तु पूर्वोक्तं श्लोकमेव पण्डिता अनुष्टुबिति व्यवहरन्ति । के चन पद्यमित्यपि व्यपदिशन्ति ।

तथाच पद्यलक्षणं यथोक्तमभियुक्तैः—

पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।
षष्ठं गुरु विजानीयादेतत्पद्यस्य लक्षणम् ॥ ५ ॥ इति ।

आठ अक्षरके पादवाले वृत्तोंमें अनुष्टुप् के अवान्तर भेद श्लोक च्छन्दका लक्षण कहते हैं—जैसा कि श्रुतबोधमें कहा है—श्लोक (अनुष्टुब्) छन्दके आठ अक्षर वाले चारो चरणो में छठवां अक्षर-गुरु और पांचवां अक्षर लघु होता है । तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणमें सातवां अक्षर लघु, और प्रथम तृतीयचरणोंमें सातवां अक्षर दीर्घ=गुरु होता है ॥ ४ ॥

इस छन्द में इतना ही विशेष है—आठ अक्षर के पादवाले सब छन्द अनुष्टुब् कहे जाते हैं । परन्तु पूर्वोक्त श्लोक को ही पण्डितलोग अनुष्टुब् कहते हैं । कोई इसीको पद्यभी कहते हैं—

पद्य का लक्षण, जैसा कि पण्डितो नें कहा है—

सब चरणो में पांचवा अक्षर लघु हो द्वितीय और चतुर्थ चरण में सातवां अक्षर लघु हो, अर्थात् प्रथम तृतीय चरणमें सप्तम अक्षर गुरु हो तथा सब चरणों में छठा अक्षर गुरु हो, यह पद्य का लक्षण है । शेष अक्षरों के लिये कोई नियम नहीं, चाहे वे अक्षर लघु हों अथवां गुरु हों ॥ ५ ॥

उदाहरण भी यही है—जैसे—

५ ६ ७ ५ ६ ७
। ऽ ऽ ऽ ऽ ।
श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम ।
ऽ ऽ ऽ ऽ ।
द्विचतुष्पा दयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्य योः ।
५ ६ ७ ५ ६ ७

पद्य का उदाहरण लक्षणश्लोक ही है । जैसे—

५ ६ ७ ५ ६ ७
। ऽ ऽ । ऽ ।
पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।
षष्ठं गुरु विजानीया देतत्पद्यस्य लक्षणम् ।
। ऽ ऽ । ऽ ।
५ ६ ७ ५ ६ ७

अथाऽष्टाक्षरपादवृत्ते ऽप्रासङ्गिकमपि काशीस्थराजकीयप्रथमपरीक्षाग्रन्थसूच्यामक्रमेण निर्दिष्टमर्द्धसमवृत्तान्तर्गतं 'वियोगिनी' वृत्तमाह—यथोक्तमाभियुक्तैः—

विषमे ससजा गुरुः समे ।
सभरालो ऽथ गुरुर्वियोगिनी ॥ ६ ॥

ग्रन्थान्तरे त्विदमेव वृत्तं 'सुन्दरी'त्युच्यते । तल्लक्षणं च—अयुजोर्यदि सौ जगौ युजोः सभरा ल्गौ यदि सुन्दरी तदा । इति । शोकवर्णनादाविदमेव वृत्तमुपयुज्यते महाकविभिः । रघुवंशे अजविलापे, कुमारसम्भवे रतिविलापे चेदमेव वृत्तमस्ति ।

अब आठ अक्षरके पादवाले वृत्तोंमें अप्रासङ्गिक होने पर भी बनारस गवर्नमेन्ट संस्कृतकालेज की प्रथम परीक्षाके ग्रन्थोंकी सूची में अक्रमसे निर्दिष्ट अर्द्धसमवृत्तान्तर्गत 'वियोगिनी' वृत्त का लक्षण कहते हैं—

जिस वृत्तके विषम अर्थात् प्रथम तृतीय चरणोंमे दो सगण, एक जगण, और एक गुरु हो, और सम अर्थात् द्वितीय चतुर्थ चरणों मे एक सगण, एक भगण, एक रगण, एक लघु, और एक गुरु हो तो उसे 'वियोगिनी' कहते हैं ।

ग्रन्थान्तरमें इसी वृत्त का 'सुन्दरी' नाम कहा गया है । शोकवर्णनमें महाकवि लोग इसी वृत्तका उपयोग करते हैं । रघुवंशके अजविलापमें और कुमारसम्भवके रतिविलापमें यही वृत्त है ।

इसका उदाहरण भी यह लक्षणश्लोक ही है । जैसे—

विषमे ससजा गुरुः समे सभरा लो ऽथ गुरुर्वियोगिनी ।
। । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ
सगणः सगणः जगणः गुरुः सगणः भगणः रगणः लघुः गुरुः
विषमे समे

अथाष्टाक्षरवृत्ते 'माणवकाक्रीड'लक्षणमाह । यथोक्तं श्रुतबोधे—

आदिगतं तुर्यगतं पञ्चमकं चान्त्यगतम् ।
स्याद्गु गुरु चेत् तत् कथितं माणवकाक्रीडमिदम् ॥ ७ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा-'माणवकाक्रीडितकं भ्तौ लगौ' । इति ।

वृत्तरत्नाकरे च—'माणवकं भात् तलगाः' । इति ।

अब अष्टाक्षरपाद वाले वृत्तोंमें 'माणवकाक्रीड' नामक वृत्त का लक्षण कहते हैं, जैसा कि श्रुतबोधमें कहा है—

आठ अक्षरके पादवाले जिस वृत्तमें प्रथम, चतुर्थ, पञ्चम, और अष्टम अक्षर गुरु हो, उसको 'माणवकाक्रीड' कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इस प्रकार है--

जिसके प्रत्येक चरणमें एक भगण, एक तगण, एक लघु, और एक गुरु क्रमसे हों वह 'माणवकाक्रीडित' है ।

वृत्तरत्नाकरक लक्षण का भी यही अर्थ है ।

उदाहरण भी लक्षणश्लोक ही है-जैसे--

१ ४ ५ ८ १ ४ ५ ८
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आदि गतं तुर्यगतं पञ्चमकं चान्त्य गतम् ।
ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ
भग णः तगणः ल० गु० भगणः तगणः ल० गु०
स्याद् गुरु चेत् तत् कथितं माणवका क्रीडमिदम् ।

अथाष्टाक्षरवृत्ते 'नगस्वरूपिणी'लक्षणमाह । यथोक्तं श्रुतबोधे—

द्वितुर्यषष्ठमष्टमं गुरु प्रयोजितं यदा ।
तदा निवेदयन्ति तां बुधा नगस्वरूपिणीम् ॥ ८ ॥

पिङ्गलसूत्रे इयमेव 'प्रमाणिके'ति नाम्ना लक्षिता । तथा च तल्लक्षणम्—'ल्गिाति प्रमाणिका' इति ।

वृत्तरत्नाकरे च तल्लक्षणं यथा—'प्रमाणिका जरौ लगौ' इति ।

अब अष्टाक्षर पादवाले वृत्तोंमें 'नगस्वरूपिणी' का लक्षण कहते हैं । जैसा कि श्रुतबोधमें कहा है--

आठ अक्षरके पादवाले जिस छन्दके प्रत्येक पादमें द्वितीय,

चतुर्थ, षष्ठ, और अष्टम अक्षर गुरु हों उसको पण्डित लोग नगस्वरूपणी कहते हैं।

पिङ्गलसूत्रमें इसी छन्दको 'प्रमाणिका' इस नाम से कहा है। उसका लक्षण इस प्रकार है--

पहिले लघु आगे गुरु इस क्रमसे अक्षर विन्यास कर अष्टाक्षर पादके बने हुए छन्द को 'प्रमाणिका' कहते है।

वृत्तरत्नाकरके अनुसार लक्षण इस प्रकार है--

एक जगणके बाद एक रगण, एक लघु, और एक गुरु, इस प्रकार आठ अक्षरके चरण वाले छन्द को 'प्रमाणिका' कहते हैं।

उदारहण भी लक्षणश्लोकही है। जैसे--

२ ४ ६ ८ २ २ ६ ८
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
द्वितुर्य षष्ठ मष्टमं गुरु प्रयोजितं यदा।
। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ
जगणः रगणः ल०गु० जगणः रगणः ल०गु०
तदा निवेदयन्तितां बुधा नगस्वरूपिणीम्।

अथाष्टाक्षरवृत्ते "विद्युन्माला" लक्षणमाह—

सर्वे वर्णा दीर्घा यस्यां विश्रामः स्याद्व वेदैर्वेदैः।
विद्वद्वृन्दैश्छंदोविज्ञैर्व्याख्याता सा विद्युन्माला॥ ६॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा-"विद्युन्माला मौ गौ" इति। छन्दोमञ्जरीवृत्तरत्नाकरयोश्च-"मो मो गो गो विद्युन्माला" इति।

अब अष्टाक्षर पादवाले वृत्तो में 'विद्युन्माला' का लक्षण कहते हैं--

जिस अष्टाक्षर पादवाले वृत्तमें सब वर्ण दीर्घ हों और चार चार अक्षरों पर विश्राम हो, छन्दःशास्त्रके जानकार पण्डितोनें उस छन्दको 'विद्युन्माला' कहा है।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इस प्रकार हैं--

दो मगण और दो गुरु इस प्रकार ८ अक्षरके पादवाले वृत्तको 'विद्युन्माला' कहते हैं। छन्दोमञ्जरी और वृत्तरत्नाकरके लक्षणों का भी यही आशय है।

उदाहरणभी यही श्लोक है—

ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽऽऽ
सर्वे वर्णा दीर्घा यस्यां विश्रामः स्याद्वेदैर्वेदैः ।
यतिः यतिः यतिः यतिः
विद्वद्वृन्दैश्छन्दो विज्ञै र्व्याख्याता सा विद्युन्माला ।
ऽऽऽऽऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ऽऽऽऽ
मगणः मगणः गु०गु० मगणः मगणः गु०गु०

अथ दशाक्षरवृत्ते 'चम्पकमाला' लक्षणमाह—

यत्र गुरु स्यादाद्यचतुर्थं पञ्चमषष्ठं चान्त्यमुपान्त्यम् ।
इन्द्रियबाणैश्चैव विरामः सा कथनीया चम्पकमाला ॥ १० ॥

इयमेव प्राचीनैराचार्यैः "रुक्मवती"त्युक्ता। तथा च तल्लक्षणं पिङ्गलसूत्रे—"रुक्मवती भ्मौ स्गौ" इति । छन्दोमञ्जर्यां च—"रुक्मवती सा यत्र भमस्गाः" । इति ।

अब दस अक्षरके पादवाले वृत्तों में 'चम्पकमाला' का लक्षण कहते हैं—

दशाक्षरपादवाले जिस छन्दके प्रत्येक पादमें पहिला, चौथा, पांचवा, छठा, नववाँ, और दसवां अक्षर गुरु हो, और पांच पांच अक्षरों पर विराम हो, उस छन्द को 'चम्पकमाला' कहते हैं ।

प्राचीन आचार्योंनें इसीको 'रुक्मवती' कहा है । उसका लक्षण जैसा कि पिङ्गलसूत्रमें—-

एक भगण, एक मगण, एक सगण, और एक गुरु क्रमसे यदि प्रत्येक चरणमें हों, तो उसको 'रुक्मवती' कहते हैं । छन्दोमञ्जरी के लक्षण का भी यही आशय है ।

उदाहरण लक्षणश्लोक ही है । जैसे—

१ ४ ५ ६ ९ १० १ ४ ५ ६ ९ १०
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
यत्र गुरु स्यादाद्यचतुर्थं पञ्चमषष्ठं चान्त्यमुपान्त्यम् ।
यतिः यतिः यतिः यतिः
इन्द्रियबाणैर्यत्र विरामः सा कथनीया चम्पकमाला ।
ऽ।।ऽ ऽऽ।।ऽ ऽ ऽ।।ऽ ऽ ऽ।।ऽ ऽ
भगणः मगणःसगणः गु० भगणः मगणः सगणः गु०

अथ लक्षणरचनासौकर्याय मध्ये नवाक्षरवृत्तमणिबन्धच्छ-

न्दोलक्षणमाह—

चम्पकमाला यत्र भवे—दन्त्य विहीना लक्षणतः ।
छन्दसि दक्षा ये कवय स्तन्मणिबन्धं ते ब्रुवते ॥ ११ ॥

इदमेव मणिमध्यमिति छन्दोमञ्जरीकारः । तथा च तल्लक्षणम्—

"स्यान्मणिमध्यं चेद्भ भमसाः" । इति ।

लक्षण बनानेके सौकर्यके लिये दक्षाक्षरवृत्तप्रस्तावके बीचमें पूर्वानुक्तनवाक्षरवृत्तान्तर्गत 'मणिबन्ध'च्छन्द का लक्षण कहते हैं—

चम्पक माला छन्दके लक्षणानुसार दक्षाक्षरवाले उसके चरण का अन्त्य, अर्थात् दशम अक्षर निकाल दिया जायः, तो शेष नवाक्षर पादवाला यह **'मणिबन्ध'** वृत्त कहावेगा, ऐसा छन्दःशास्त्रमें दक्ष कवि लोग कहते हैं ।

इसी वृत्त को छन्दोमञ्जरीकार 'मणि मध्य' कहते है । उनका लक्षण इस प्रकार है—

'यदि एक भगण, एक मगण, और एक सगण यथा क्रम हों, तो उस नवाक्षर पाद वाले वृत्त को 'मणिमध्य' कहते हैं ।

उदाहरणभी यही है—

१ ४ ५ ६ ९ १०
S I I S S S I S S
चम्पकमालायत्रभवे- ० चम्पकमालापादः दशाक्षरः ।
S I I S S S I I S
भगणः मगणःसगणः
(मणिमध्यम)

अथ क्रमप्राप्तदशाक्षरवृत्तान्तर्गतवक्ष्यमाणहंसीछन्दोलक्षण रचनासौकर्याय मण्डूकप्लुत्या सप्तदशाक्षरवृत्तान्तर्गत 'मन्दाक्रान्ता' छन्दोलक्षणमाह—

चत्वारः प्रागथ च गुरवो द्वौ दशैकादशौ चेत्त-
द्वर्णौ तदनु गुरुताशालिनौ द्वादशान्त्यौ ॥
तद्वचान्त्यौ युगरसहयैर्यत्र भूयाद्विरामो
मन्दाक्रान्तां प्रवरकवयस्तां मुदा सङ्गिरन्ते ॥ १२ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—'मन्दाक्रान्ता म्भौ न्तौ तगौ ग्

समुद्रर्तुस्वराः' । इति । छन्दोमञ्जर्यां च,—'मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भगौ गो ययुग्मम्' इति । वृत्तरत्नाकरलक्षणं तु पिङ्गलस्थलक्षणेन समानमेव । केवलं छन्दोबद्धमिति विशेषः ।

अब क्रम प्राप्त दशाक्षर पादवाले वृत्तोंके अन्तर्गत आगे कहे जाने वाले हंसी छन्दके लक्षण बनानेमें सुभीतेके लिये मण्डूकप्लुति से सत्रह अक्षरके पादवाले वृत्तोंके अन्तर्गत 'मन्दाक्रान्ता' वृत्त का लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें पहिले चार (प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ) अक्षर, तथा दसवां, ग्यारहवां, तेरहवां, चौदहवां, सोरहवां तथा सत्रहवां, अक्षर गुरू हो और बाकी सब अक्षर लघु हों, तथा क्रमसे चार, छ, और सात अक्षरों पर विश्राम हो ऐसे सत्रह अक्षरके चरणवाले छन्दको कविलोग "मन्दाक्रान्ता" कहते हैं ।

पिङ्गल सूत्रमें लक्षण इस प्रकार है—

"जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण और दो गुरु इस क्रमसे सत्रह अक्षर हों और चार, छ, सात अक्षरों पर विश्राम हो उसे 'मन्दाक्रान्ता' कहते हैं' ।

छन्दो मञ्जरीका लक्षण भी इस प्रकार है—

"एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो गुरु, और दो यगण, इस प्रकार सत्रह अक्षर का चरण हो और चार, छ, सात अक्षरों पर विश्राम हो, उस छन्दको 'मन्दाक्रान्ता' कहते हैं" ।

वृत्तरत्नाकर का लक्षण पिङ्गलसूत्रके लक्षणके समान ही है केवल वह छन्दोबद्ध है इतना विशेष है ।

उदाहरण भी यही श्लोक है—

१ २ ३ ४ १० ११ १३ १४ १६ १७
S S S S S S S S S S
चत्वारः प्रा ग थ च गुरवो द्वौ दशैकादशौ चे—
यतिः यतिः यतिः

S S S | S | | | | | S S | S S | S S
मगणः भगणः नगणः तगणः तगणः गुरुः

छन्दोमञ्जरीके लक्षणानुसार—

नन्नन्न णौँतद नुगुरु ता शा
S S S S I I I I I S S
मगणः भगणः यगणः गु०गु०
लिनौह्वा दशान्त्यौ
I S S I S S
यगणः यगणः

अथ पुनः क्रमप्राप्तं दशाक्षरपादवद्वृत्तान्तर्गतहंसीछन्दोलक्षणमाह—

मन्दाक्रान्ताऽन्त्ययतिरहिता वर्णैर्युक्ता दशभिरिह सा ।
विद्वद्वृन्दैर्ध्रुवमभिहिता हंसी नाम्ना विदितविभवा ॥१३॥

वृत्तरत्नाकरपरिशिष्टे तल्लक्षणं यथा—"ज्ञेया हंसी मभनगयुता" इति ।

अब फिर से क्रमप्राप्त दशाक्षर पाद वाले वृत्तोंके अन्तर्गत 'हंसी' छन्द का लक्षण कहते हैं—

'मन्दाक्रान्ता' छन्दका जो लक्षण पहिले कहा गया है, उसमें अन्तिम यति, अर्थात् विराम से रहित दस अक्षरके पाद वाला 'हंसी' इस नामसे प्रसिद्ध यह छन्द पण्डित लोगोनें निश्चितरूपसे माना है ।

अर्थात सत्रह अक्षरके पाद वाले 'मन्दाक्रान्ता' छन्दके आरंभके दस अक्षरों सें हंसी छन्दका एक चरण होता है ।

वृत्तरत्नाकरके परिशिष्टमें 'हंसी' छन्दका लक्षण इस प्रकार है—

जिस छन्दमे एक मगण, एक भगण, एक नगण, और एक गुरु हो, उस दस अक्षरके पाद वाले छन्दको 'हंसी' कहते हैं ।

उदाहरणभी यही है । जैसे—

१ २ ३ ४ १०
S S S S S
मन्दाक्रान्ताऽन्त्ययतिरहिता (मन्दाक्रान्ताके लक्षणानुसार)

S S S S I I I I I S
वर्णैर्युक्ता दशभिरिह सा ।
मगणः भगणः नगणः गु०

अथैकादशाक्षरपादवत्सु वृत्तेषु 'शालिनी' वृत्तलक्षणमाह—

ह्रस्वो वर्णो जायते यत्र षष्ठो
वर्णो भूयात्तद्वदेवाऽष्टमान्त्यः ।
विश्रामः स्याद्यत्र वेदैस्तुरङ्गै-
स्तां भाषन्ते शालिनीं छान्दसीयाः ॥ १४ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"शालिनी म्तौ त्गौग् समुद्र-ऋषयः" । इति ।

वृत्तरत्नाकरे—"शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः" ।इति ।

छन्दोमञ्जर्याम्—"मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः" ।इति च ।

अब ग्यारह अक्षरकेपादवाले वृत्तों में 'शालिनी' वृत्त का लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें छठा तथा नवाँ अक्षर ह्रस्व, अर्थात् लघु हो, और बाकी बचे सब अक्षर गुरु हों, तथा ४ और ७ अक्षरों पर यति अर्थात् विराम हों तो उस ११ अक्षरके पाद वाले छन्दको छन्दःशास्त्रके जानकार लोग "शालिनी" कहते हैं । पिंङ्गलसूत्रमें लक्षण इस प्रकार है—

जिसमें एक मगण, दो तगण, और दो गुरु क्रमसे हों, और ४, ७ अक्षरों पर विराम होतो उसे 'शालिनी' कहते हैं ।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणों का भी यही अर्थ है । उदाहरणभी यही है । जैसे—

१ २ ३ ४ ५ (६) ७ ८ (९) १० ११
S S S S S । S S । S S
ह्र स्वो वर्णो जायते यत्र षष्ठो
वर्णो भूयात्तद्वदेवाष्टमान्त्यः ।

S S S S S । S S । S S
म ग णः तगणः तगणः गु० गु०

अथैकादशाक्षरपादवद्वृत्तेषु 'दोधक' वृत्तलक्षणमाह—

आद्यचतुर्थमिहाक्षरमुक्तं सप्तमकं दशमं च तथान्त्यम् ।
छन्दसि यत्र गुरुत्वसमेतं तत्कथितं ननु दोधकवृत्तम् ॥१५॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"दोधकं भौ भ्गौग्" । इति ।

वृत्तरत्नाकरे—'दोधकवृत्तमिदं भभभाद्गुगौ' इति ।

छन्दोमञ्जर्याम्—'दोधकमिच्छति भत्रितयाद्गुगौ' इति च ।

अब ग्यारह अक्षरके पाद वाले वृत्तोंमें 'दोधक' वृत्तका लक्षण कहते हैं—जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें पहिला, चौथा, सातवां, दसवां और अन्त्य, अर्थात् ग्यारहवां अक्षर गुरु हो उसे 'दोधक' वृत्त कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्र का लक्षण इस प्रकार है—

तीन भगण, और दो गुरु जिसके प्रत्येक पादमें हों, वह 'दोधक' वृत्त है ।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणों का भी यही आशय है । उदाहरणभी यही है । जैसे—

१ ४ ७ १० ११
ऽ ऽ ऽ ऽऽ
आद्यचतुर्थमिहाक्षरमुक्तं
सप्तमकं दशमं च तथान्त्यम् ।
ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ
भगणः भगणः भगणः गु० गु०

अथेन्द्रवज्रालक्षणमाह—

यस्यां त्रिषट्सप्तममक्षरं स्याद्ध्रस्वत्वयुक्तं नवमं च तद्वत् ।
श्रीकालिदासादिकवीन्द्रमान्यां तामिन्द्रवज्रां ब्रुवते बुधेन्द्राः ॥१६॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—'इन्द्रवज्रा तौ ज्गौग्' इति ।

वृत्तरत्नाकरछन्दोमञ्जर्योश्च—"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः" इति च ।

अब 'इन्द्रवज्रा' छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दमें तीसरा, छठां, सातवां और नववां अक्षर लघु, अर्थात् ह्रस्व हो, और बाकी सब अक्षर गुरु हों, उस ११ अक्षरके पाद वाले श्रीकालिदासादिकविश्रेष्ठों से मान्य छन्दको श्रेष्ठपण्डितलोग 'इन्द्रवज्रा' कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इस प्रकार है—

जिसके प्रत्येक चरणमें दो तगण, एक जगण, और दो गुरु क्रम से हों उसे 'इन्द्रवज्रा' कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणों का भी यही आशय है।

उदाहरणभी यही है—

३ ६ ७ ९

यस्यां त्रिषट्सप्तममक्षरंस्याद्
ह्रस्वत्वयुक्तं नवमं चतद्वत् ।
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

तगणः तगणः जगणः गु०गु०

अथोपेन्द्रवज्राछन्दोलक्षणमाह—

यदीन्द्रवज्राचरणेषु पूर्वे भवन्ति वर्णा लघुतासमेताः ।
अमन्दविद्याविदितैस्तदानीमुपेन्द्रवज्रा कथिता कवीन्द्रैः ॥१७॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—'उपेन्द्रवज्रा ज् तौ ज्गौ ग्' इति ।

वृत्तरत्नाकरे—'उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ' इति ।

छन्दोमञ्जर्याम्—'उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा' । इतिच ।

अब 'उपेन्द्रवज्रा' छन्दका लक्षण कहते हैं—

यदि इन्द्रवज्रा छन्दके चारों चरणोंके प्रथम अक्षर लघु अर्थात् ह्रस्व हों, तो विशिष्ट विद्या से प्रसिद्ध कविश्रेष्ठोंने उस छन्दको 'उपेन्द्रवज्रा' कहा है।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इस प्रकार है—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें एक जगण, एक तगण, फिर एक जगण, और दो गुरु हों तो उसे 'उपेन्द्रवज्रा' कहते हैं।

वृत्तरत्नाकरके लक्षण का आशय पिङ्गलके समान ही है।

छन्दोमञ्जरी का लक्षण इस प्रकार है—

यदि इन्द्रवज्रा छन्दके प्रत्येक पादका प्रथम अक्षर लघु हो तो उसे 'उपेन्द्रवज्रा' कहते हैं।

उदाहरणभी यही है—जैसे—

यदीन्द्रवज्रा चरणेषु पूर्वे
भवन्ति वर्णा लघुता समेताः ।
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जगणः तगणः जगणः गु०गु०

अथोपजातिनामकच्छन्दोलक्षणमाह—

यत्र द्वयोरप्यनयोस्तु पादा भवन्ति तावन्मिलिता मिथस्ते ।
विद्वद्भिराद्यैः परिकीर्तिता सा प्रयुज्यतामित्युपजातिरेषा ॥१८॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—'आद्यन्तावुपजातयः' इति ।

वृत्तरत्नाकरे छन्दोमञ्जर्याञ्च—

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम॥१९॥ इति।

अब 'उपजाति' नामक छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दमे इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनोंके लक्षणों से युक्त चरण परस्परमें मिलित हों, प्राचीन पण्डित उस छन्दको 'उपजाति' कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इस प्रकार है—आदि (इन्द्रवज्रा) अन्त (उपेन्द्रवज्रा) ये दोनो परस्पर मिलित होने से अनेक प्रकार की उपजातियां होती है ।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षण इस प्रकार है--

अव्यवहित पूर्वमें जो इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा छन्द कहे गये हैं, उन दोनोंके लक्षणों से युक्त जिस छन्दके चरण हो वह उपजाति छन्द कहा जाता है । इसी प्रकार दूसरे समानाक्षर चरणवाले छन्दोंके परस्पर मिश्रण से उपजाति होती है ।

उदाहरणभी यही है--

यत्र द्वयोरप्यनयो स्तुपादा
(इन्द्रवज्रापादः) ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
गु०गु०
तगणः तगणः जगणः

भवन्ति तावन्मिलिता मिथस्ते ।
(उपेन्द्रवज्रापादः) । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जगणः तगणः जगणः गु॰गु॰

विद्वद्भिराद्यैः परिकीर्तिता सा
(इन्द्रवज्रापादः) ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जगणः तगणः जगणः गु॰गु॰

प्रयुज्यतामित्युपजातिरेषा ॥
(उपेन्द्रवज्रापादः) । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जगणः तगणः जगणः गु॰गु॰

अथोपजातिभेदान्तर्गतयोराख्यानकी—विपरीताख्यानकी छन्दसोर्लक्षणमाह—

आख्यानकी स्याद्विदिताभिधाना यदीन्द्रवज्राचरणः पुरस्तात् ।
उपेन्द्रवज्राचरणास्त्रयोऽन्ये मनीषिणोक्ता विपरीतपूर्वा ॥ १६ ॥

आख्यान कीलक्षणं पिङ्गलसूत्रे यथा—

"आख्यानकी तौ ज्गौग्, ज्तौ ज्गौग्" इति ।

विपरीताख्यानकीलक्षणं च तत्रैव यथा—

"विपरीताख्यानकी ज्तौ ज्गौग् तौ ज्गौ ग्" इति ।

वृत्तरत्नाकरे तयोर्लक्षणं यथा—

आख्यानकी तौ जगुरू ग ओजे,
जजतावनोजे जगुरू गुरुश्चेत् ॥
जतौ जगौ गो विषमे, समे तौ
जगौग एषा विपरीतपूर्वा ॥

अब उपजातिभेदों के अन्तर्गत आख्यानकी और विपरीताख्यान-की छन्दों के लक्षण कहते हैं—

बहुत प्रकारकी उपजातियों में यदि पहिले इन्द्रवज्राका चरण हो, और शेष तीन चरण केवल उपेन्द्रवज्रा के, अथवा इद्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा से मिश्रित हों तो वह छन्द "आख्यानकी" कहा जाता है ।

यदि प्रथम उपेन्द्रवज्राका चरण हो, और बाकी तीन चरण केवल इन्द्रवज्राके अथवा इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रासे मिश्रित हों, तो पण्डितलोग

उसे "विपरीताख्यानकी" कहते हैं।

आख्यानकीका लक्षण वृत्तरत्नाकर में इस प्रकारहै—

जिस छन्दके प्रथम तृतीय चरणोंमें दो तगण, एक जगण, और दो-गुरु (इन्द्रवज्राका चरण) हो, तथा द्वितीय चतुर्थपाद में, एक जगण, एक तगण, फिर एक जगण, और दोगुरु (उपेन्द्रवज्राका चरण) हो, तो "आख्यानकी" नामकी उपजाती होती है।

'विपरीताख्यानकी'का लक्षण वृत्तरत्नाकरमें इसप्रकार है—

यदि विषम अर्थात् प्रथमतृतीय चरणोंमें एक जगण, एक तगण, और एक जगण, और दो गुरु (उपेन्द्रवज्राका चरण) हो, तथा सम अर्थात् द्वितीयचतुर्थ चरणोंमें दो तगण, एक जगण, और दो गुरु (इन्द्रवज्राका-चरण) हो तो "विपरीताख्यानकी" नामकी उपजाति होती है।

उदाहरणभी यही है—

आख्यानकी स्याद्विदि ताभि धाना
(इन्द्रवज्राचरणः) ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगणः तगणः जगणः गु० गु०

यदीन्द्रवज्राचरणः पुरस्तात्।
(उपेन्द्रवज्राचरणः) । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जगणः तगणः जगणः गु० गु०

उपेन्द्रवज्राचरणस्त्रयोऽन्ये
(उपेन्द्रवज्राचरणः) । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जगणः तगणः जगणः गु० गु०

मनीषिणोक्ता विपरीतपूर्वा॥
(उपेन्द्रवज्राचरणः) । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जगणः तगणः जगणः गु०गु०

यह "आख्यानकी" छन्दका उदाहरण है।

'विपरीताख्यानकी' छन्दका उदाहरण जैसे—

चिरं सुखं जीवतु राजराजो
(उपेन्द्रवज्राचरणः) । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
जगणः तगणः जगणः गु०गु०

जार्जो नृपालः सदयः प्रजासु।

(इन्द्रवज्राचरणः) ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

तगणः तगणः जगणः गु० गु०

तस्य प्रसादादिह भारतेऽस्मिन्

(इन्द्रवज्राचरणः) ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

तगणः तगणः जगणः गु० गु०

सौराज्य मास्ते जननाहिताय।

(इन्द्रवज्राचरणः) ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

तगणः तगणः जगणः गु० गु०

अथ 'रथोद्धता' वृत्तलक्षणमाह—

आद्यमक्षरमतस्तृतीयकं सप्तमं च नवमं तथाऽन्तिमम्।
दीर्घतां भजति यत्र पूजितास्तां वदन्ति कवयो रथोद्धताम्॥२०॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"रथोद्धता रनौ रलौ ग्" इति।

वृत्तरत्नाकरे—"रान्नराविह रथोद्धता लगौ" इति।

छन्दोमञ्जर्याञ्च—"रात्परैर्नरलगै रथोद्धता" इति च।

अब 'रथोद्धता' छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दमें प्रथम, तृतीय, सप्तम, नवम, और एकादश अक्षर दीर्घ अर्थात् गुरु हों, और बाकी सब अक्षर लघु हों तो उस एकादशाक्षरपादवाले छन्दको श्रेष्ठ कविलोग 'रथोद्धता' कहते हैं।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इसप्रकारहै—

जिस वृत्तमें एक रगण, एक नगण, फिर एक रगण, एक लघु, और एक गुरु क्रमसे हों तो उसे 'रथोद्धता' कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणोंका आशय भी पिङ्गलसूत्रके लक्षणके समान ही है, केवल वे दोनो लक्षण रथोद्धताछन्दोबद्ध हैं इतना ही विशेष है।

उदाहरणभी यही है—

१ ३ ७ ९ ११

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

आद्यम क्षरम तस्तृती यकं।

ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ

रगणः नगणः रगणः ल० गु०

सप्तमं च नवमं तथान्तिमम्
S I S I I I S I S I S
रगणः नगणः रगणः ल०गु०

अथ 'स्वागता' नामकच्छन्दोलक्षणमाह—

अक्षरं च नवमं दशमं चेद् व्यत्ययाद् भवति यत्र हि वृत्ते ।
पूर्ववर्णितसमं यदि सैव स्वागतेति कविभिःकथिता ऽसौ ॥२१॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"स्वागता र्नौ भ्गौ ग्" इति ।
वृत्तरत्नाकरे "स्वागतेति रनभाद् गुरुयुग्मम्" इति ।
छन्दोमञ्जर्याञ्च "स्वागता रनभगै र्गुरुणा च" इति च ।

अब 'स्वागता' नामक छन्दका लक्षण कहतें हैं—

पूर्ववर्णित 'रथोद्धता' नामक छन्दमें नवम अक्षर गुरु और दशम अक्षर लघु हो ऐसा कहा गया है, उससे विपरीत यदि नवम अक्षर लघु और दशम अक्षर गुरु हो और बाकी सब अक्षर पूर्ववत् हों तो उसीको कविलोग 'स्वागता' नामक छन्द कहते हैं—

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इसप्रकार है—

जिस छन्दमें एक रगण एक नगण एक भगण, और दो गुरु इस प्रकार ११ अक्षर का पाद हो तो उसे 'स्वागता' कहते हैं ।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरींके लक्षणोंका आशयभी पिङ्गलसूत्रके लक्षणके समान ही है ।

उदाहरण भी यहीहै । जैसे—

९ १०
I S
अक्षरं च नवमं दश मं चेद्
९ १०
I S I
व्यत्ययाद् भवति यत्र हि वृत्ते
S I S I I I S I I S S
रगणः नगणः भगणः गु०गु०

अथ क्रमशो द्वादशाक्षरपादवृत्तेषु 'वैश्वदेवी' छन्दोलक्षणमाह—

ह्रस्वो वर्णः स्यात्सप्तमो यत्र वृत्ते तद्वद् भूयाद्विन्यस्त एकादशाद्यः ।
बाणै र्विश्राम स्तत्र चेत् स्यात्तुरङ्गै र्नाम्ना निर्दिष्टा सा तदा वैश्वदेवी ॥२२॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा--"वैश्वदेवी मौ याविन्द्रिय-ऋषयः" इति ।

वृत्तरत्नाकरछन्दोमञ्जर्योश्च-"बाणाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ" इति च ।

अब क्रमसे बारह अक्षरके पादवाले वृत्तो में 'वैश्वदेवी' नामक वृत्तका लक्षण कहतेहैं—

जिस छन्दमें सातवां और दसवां अक्षर ह्रस्व अर्थात् लघु हो, और बाकी सब अक्षर गुरु हों, तथा पांच और सात अक्षरोंपर विश्राम अर्थात् यति हो तो उसे 'वैश्वदेवी' नामक छन्द कहतहैं ।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इसप्रकार है-

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में दो मगण और दो यगण, हों, और ५, ७ अक्षरोंपर यति हो उसे 'वैश्वदेवी' कहते हैं ।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणोंका आशय पिङ्गलसूत्रके लक्षणके समान ही है ।

उदाहरणभी यही है । जैसे-

७ १०

ह्रस्वो वर्णः स्यात्सप्तमो यत्र वृत्ते

७ १०

तद्वद् भू याद्विन्य स्त पङ्क्ता दशाद्यः ।

ऽऽ ऽ ऽऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

मगणः मगणः यगणः यगणः

अथ तत्रैव 'तोटक' च्छन्दोलक्षणमाह—

सतृतीयकषष्ठमिहाक्षरकं नवमं विरतिप्रभवं गुरु चेत ।
कविभिः प्रथितं भुवनत्रितये ननु तोटकवृत्तमिदं कथितम् ॥२३॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"तोटकं सः" इति ।

वृत्तरत्नाकरे—"इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्" इति ।

छन्दोमञ्जर्याम्—"वद तोटकमब्धिसकारयुतम्" इति च ।

बारह अक्षरके पादवाले वृत्तो में 'तोटक' नामक छन्दका लक्षण कहते हैं-

जिस छन्दमें तीसरा, छठा, नववां और बारहवां अक्षर गुरु हो, और बाकी सब अक्षर लघु हों तो ऐसे १२ बारह अक्षरके पादवाले छन्दको तोटक' कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इस प्रकार हैं-

जिस छन्दके प्रत्येक पादमें ४ सगण हों वह 'तोटक' छन्द हैं ।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणों का आशयभी पिङ्गलसूत्र के लक्षणके समान ही है ।

उदाहरणभी यही है । जैसे—

३ ६ ९ १२
ऽ ऽ ऽ ऽ
सतृतीयक षष्ठमिहाक्षरकं
३ ६ ९ १२
ऽ ऽ ऽ ऽ
नवमं विरति प्रभवं गुरुचेत्।
।।ऽ ।।ऽ ।।ऽ ।।ऽ

सगणः सगणः सगणः सगणः

अथ तत्रैव 'भुजङ्गप्रयात'च्छन्दोलक्षणमाह—

यदाद्यं चतुर्थं तथा सप्तमं स्यात्
तथैवाक्षरं ह्रस्वमेकादशाद्यम् ।
जगन्मानितैः पण्डितैश्छान्दसीयै-
स्तदुक्तन्तु वृत्तं भुजङ्गप्रयातम् ॥ २४ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"भुजङ्गप्रयातं यः" इति ।

वृत्तरत्नाकरे—"भुजङ्गप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः" । इति ।

छन्दोमञ्जर्याम्-"भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः" इति च ।

अब बारह अक्षरके पादवाले वृत्तो में 'भुजङ्गप्रयात' छन्दका लक्षण कहते हैं-

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें यदि पहिला, चौथा, सातवां और दसवां अक्षर ह्रस्व, अर्थात् लघु हो, परिशेषात् बाकीके सब अक्षर गुरु हों तो उस छन्दको जगन्मान्य छन्दःशास्त्रके जानकार पण्डितलोग 'भुजङ्गप्रयात' कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इसप्रकार है—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें क्रमशः ४ यगण हों वह 'भुजङ्गप्रयात' है ।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणों का आशय भी पिङ्गलके लक्षणके समानही है ।

उदाहरणभी यही है । जैसे—

१ ४ ७ १०
। । । ।
यदाद्यं चतुर्थं तथा सप्तमंस्यात्
१ ४ ७ १०
। । । ।
तथैवाक्षरं ह्रस्वमेकादशाद्यम् ॥
। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
यगणः यगणः यगणः यगणः

अथ तत्रैव 'द्रुतविलम्बित' च्छन्दोलक्षणमाह—

भवति छन्दसि यत्र चतुर्थकं गुरु च सप्तमकं दशमं तथा ।
विरतिगं च तथैव विचक्षणैर्द्रुतविलम्बितमित्युपदिश्यते ॥२५॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"द्रुतविलम्बितं नभौ भरौ" इति ।

छन्दोमञ्जर्यां वृत्तरत्नाकरे च—"द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ" इति च ।

अब बारह अक्षरके पादवाले वृत्तो में 'द्रुतविलम्बित' नामक छन्द का लक्षण कहते हैं—

बारह अक्षरके पादवाले जिस छन्दके प्रत्येक चरण में चौथा, सातवां, दसवां, और बारहवां अक्षर गुरु हो, परिशेषात् बाकीके अक्षर लघु हों, तो उस छन्दको पण्डित लोग "द्रुतविलम्बित" कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इस प्रकारहै—

बारह अक्षरके पादवाले जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक नगण, एक भगण, फिर एक भगण, एक रगण, हों, उसे 'द्रुतविलम्बित' कहते हैं ।

छन्दोमञ्जरी और वृत्तरत्नाकर के लक्षणों का भी आशय पिङ्गसूत्रके लक्षणके समान ही है ।

उदाहरणभी यही है। जैसे—

४ ऽ	७ ऽ	१० ऽ	१२ ऽ
भवति	छन्दसि	यत्र	चतुर्थकं
गुरुच	सप्तम	कं दश	मं तथा
।।।	ऽ।।	ऽ।।	ऽ।ऽ
नगणः	भगणः	भगणः	रगणः

अथ तत्रैव 'प्रमिताक्षरा' छन्दोलक्षणमाह—

यदि तोटकस्य गुरु पञ्चमकं विहितं भवेदिह तदक्षरकम् ।
रससङ्ख्यकं च गुरु चेन्न भवेत् प्रमिताक्षरेति कविभिः कथिता २६

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा-"प्रमिताक्षरा स्जौ सौ" इति।

वृत्तरत्नाकरछन्दोमञ्जर्योः—"प्रमिताक्षरा सजससैः कथिता" इति च।

अब बारह अक्षरके पादवाले वृत्तों में 'प्रमिताक्षरा' नामक छन्दका लक्षण कहते हैं—

बारह अक्षरके पादवाले जिस छन्दके प्रत्येक चरण में यदि पूर्वोक्त 'सतृतीयक' इत्यादि लक्षणवाले 'तोटक' वृत्तके प्रत्येक चरण का पांचवा अक्षर गुरु किया जाय, और छठा अक्षर गुरु न किया जाय किन्तु लघु रहे तो कविलोग उस छन्दको 'प्रमिताक्षरा' कहते हैं।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इसप्रकार है—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें एक सगण, एक जगण, फिर दो सगण क्रमसे हों, उसे 'प्रमिताक्षरा' कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणों का आशयभी पिङ्गलसूत्रके लक्षणके सदृशही है।

उदाहरणभी यही है। जैसे—

यदि तोटकस्य (५ ऽ, ६ ।) गुरुपञ्चमकं

	५ ६ ऽ ।		
विहितं	भवेदि	ह तद	क्षरकम् ॥
।।ऽ	।ऽ।	।।ऽ	।।ऽ
सगणः	जगणः	सगणः	सगणः

अथार्धसमवृत्ते 'हरिणीप्लुता' छन्दोलक्षणमाह—

प्रथमाक्षरमाद्यतृतीययो–र्द्रुतविलम्बितकस्य च पादयोः ।
यदि चेन्न तदा कविभिर्मता भवति सा प्रथिता हरिणीप्लुता ॥२७॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"हरिणप्लुता सौ स्लौ ग्, नभौ भरौ" इति ।

वृत्तरत्नाकरे—"सयुगात् सलघू विषमे गुरु—
युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता" इति ।

छन्दोमञ्जर्याम्—"अयुजि प्रथमेन विवर्जितं
द्रुतविलम्बितकं हरिणप्लुता" इति च ।

अब अर्धसमवृत्तों में 'हरिणीप्लुता' छन्द का लक्षण कहते हैं—

यदि पूर्वोक्त द्रुतविलम्बित छन्दके प्रथम और तृतीय चरणों में से पहिला अक्षर हटा दिया जाय, बाकी सब 'द्रुतविलम्बित' छन्दके समान ही रहे तो कविलोग उस छन्दको 'हरिणप्लुता' कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इस प्रकार है—

जिस छन्दके विषम अर्थात् प्रथम तृतीय चरणोंमें ३ सगण १ लघु और एकगुरु हो, तथा सम अर्थात् द्वितीय चतुर्थ चरणोंमें १ एक नगण, २ दो भगण और १ एकरगण क्रमसे हो तो उसे 'हरिणप्लुता' कहते हैं ।

वृत्तरत्नाकरके लक्षणका आशय पिङ्गलसूत्रके लक्षणके समानही है।

छन्दोमञ्जरीका लक्षण इस प्रकार है—

द्रुतविलम्बित छन्दके प्रथम तृतीय चरणों में से प्रथम अक्षर हटा दिया जाय, और द्वितीय चतुर्थ चरण यथावत् रहें तो उसे 'हरिणप्लुता' कहते हैं ।

उदाहरणभी यही है । जैसे—

(द्रुतविलम्बितके अनुसार एक अक्षर न्यून) प्रथमा क्षर मा द्यतृती ययो—
। । S । । S । । S । S
सगणः सगणः सगणः ल० गु०

द्रुतवि	लम्बित	कस्य च	पादयोः।
।।।	ऽ।।	ऽ।।	ऽ।ऽ
नगणः	भगणः	भगणः	रगणः

(द्रुतविलम्बितके अनुसार एक अक्षर न्यून)

यदि चे	न्न तदा	कविभि	र्मता
।।ऽ	।।ऽ	।।ऽ	।ऽ
सगणः	सगणः	सगणः	ल०गु०

भवति	सा प्रथि	ता हरि	णीप्लुता॥
।।।	ऽ।।	ऽ।।	ऽ।ऽ
नगणः	भगणः	भगणः	रगणः

अथ द्वादशाक्षरवृत्ते 'वंशस्थ' च्छन्दोलक्षणमाह—

उपेन्द्रवज्राचरणेषु सन्ति चे-दुपान्त्यवर्णा लघवः कृता यदा।
वृत्तेषु विज्ञा विदिता जगत्त्रये वदन्ति वंशस्थमिदं बुधास्तदा २८

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—"वंशस्था ज्तौ ज्रौ" इति।
वृत्तरत्नाकरे—"जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ"।
छन्दोमञ्जर्याम्—"वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ" इति च।

अब बारह अक्षरके पादवाले वृत्तों में 'वंशस्थ' छन्दका लक्षण कहते हैं—

ग्यारह अक्षरके चरणवाले पूर्वोक्त 'उपेन्द्रवज्रा' छन्दके प्रत्येक चरण का अन्तिम अर्थात् ग्यारहवां अक्षर ह्रस्व अर्थात् लघु किया जाय, और वह उपान्त्य बनाया जाय, अर्थात् उसके बाद और एक अक्षर रखा जाय तो उस वृत्त को वृत्तों के जानकार तीनों लोकों में प्रसिद्ध पण्डित लोग "वंशस्थ" कहते हैं।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इसप्रकार है—

जिस छन्दके प्रत्येक चरण में १ जगण, १ तगण, और १ जगण, १ रगण हो तो उसको "वंशस्थ" कहते हैं।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणों का आशय भी पिङ्गलके लक्षणके समान ही है। केवल नाममें थोड़ा विशेष है। पिङ्गलमें 'वंशस्था' नाम है, और छन्दोमञ्जरीमें 'वंशस्थविल' नाम है।

उदाहरणभी यही है—

उपेन्द्रवज्राचरणेषु सन्ति चे-
दुपान्त्य वर्णा ल घवः कृ ता यदा।

दुपान्त्य	वर्णा ल	घवः कृ	ता यदा।
। ऽ ।	ऽ ऽ ।	। ऽ ।	ऽ । ऽ
जगणः	तगणः	जगणः	रगणः

अथेन्द्रवंशाछन्दोलक्षणमाह—

यस्यां भवेयुः प्रथिता जगत्त्रये वंशस्थपादा गुरुपूर्ववर्णकाः।
शेषेण वंशस्थसमानवर्णकां तामिन्द्रवंशां कवयः प्रचक्षते ॥२६॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—'इन्द्रवंशा तौ जरौ'' इति।
वृत्तरत्नाकरे—"स्यादिन्द्रवंशा ततजैरसंयुतैः" इति।
छन्दोमञ्जर्यां च—"तच्चेन्द्रवंशा प्रथमाक्षरे गुरौ" इति च।

अब "इन्द्रवंशा" छन्दका लक्षण कहते हैं—

पूर्वोक्त 'वंशस्थ' छन्दके प्रत्येक पादका पहिला अक्षर यदि गुरु किया जाय, और बाकी सब लक्षण 'वंशस्थ' काही हो तो उस छन्दको "इन्द्रवंशा" कहते हैं।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षणं इस प्रकार है—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें दो तगण, एक जगण, और एक रगण क्रमसे हो, उसे 'इन्द्रवंशा' कहते हैं।

वृत्तरत्नाकरके लक्षणका आशयभी पिङ्गलके लक्षणके समानही है।

छन्दोमञ्जरीके लक्षणका आशय इस प्रकार है—

यदि 'वंशस्थ' छन्दके प्रतिचरणका प्रहिला अक्षर गुरु हो, तो वह 'इन्द्रवंशा' कहाता है—

उदाहरणभी यहीहै। जैसे—

गु०
ऽ

यस्यां भ	वेयुः प्र	थिता ज	गत्त्रये
ऽ ऽ ।	ऽ ऽ ।	। ऽ ।	ऽ । ऽ
तगणः	तगणः	जगणः	रगणः

गु०
ऽ
वंशस्थ पादागु रुपूर्व वर्णकाः ।
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ
तगणः तगणः जगणः रगणः

अथ त्रयोदशाक्षरपादवत्सु वृत्तेषु 'प्रभावती' छन्दोलक्षणमाह—

यस्यां भवेत्प्रथमकमक्षरद्वयं
तुर्यं तथा गुरु नवमं दशान्तिकम् ।
सान्त्यं भवेद्यदि विरतिर्युगग्रहैः ।
सा लक्षिता कविभिरहो प्रभावती ॥ ३० ॥

छन्दोमञ्जरीपरिशिष्टे च तल्लक्षणं यथा—

एते क्रमात् त भ सज संज्ञका गणा
गश्चान्ततो यदि विहिता महीपते ।
वेदैर्ग्रहैर्यदि भवति यतिश्च शोभना
नागाधिपो वदति तदा प्रभावतीम् ॥

अब तेरह अक्षरके पादवाले वृत्तों में 'प्रभावती' छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें पहिला, दूसरा, चौथा, नववां, ग्यारहवां, और तेरहवां अक्षर गुरु हो, और ४चार और नौ९अक्षरों पर विश्राम हो, उस छन्दको 'प्रभावती' कहते हैं ।

छन्दोमञ्जरीपरिशिष्टका लक्षण इस प्रकारहै—

जिस छन्दके प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, एक सगण, एक जगण और एक गुरु हो, तथा ४ और ९ अक्षरों पर विराम हो, उसे पिङ्गलमुनि 'प्रभावती' कहते हैं ।

उदाहरणभी यहीहै । जैसे—

१ २ ४ ९ ११ १३
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
यस्यां भवेत्प्रथमक मक्षरद्वयं
यतिः यतिः

तुर्यं त था गुरु नवमं दशान्ति कम् ।
ऽ ऽ । ऽ । । । । ऽ । ऽ । ऽ
गु०
तगणः भगणः सगणः जगणः

अथ तत्रैव 'प्रहर्षिणी' छन्दोलक्षणमाह—

आद्यं चेत् त्रितयमथाष्टमं नवान्त्यं
सोपान्त्यं गुरु विरतौ तथैव भूयात् ।
विश्रामो भवति महेशनेत्रदिग्भि—
र्विज्ञेया सुकविमता प्रहर्षिणी सा ॥ ३१ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—

'प्रहर्षिणी मनौ जरौग् त्रिकदशकौ' इति ।

वृत्तरत्नाकरे—

"म्नौज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम्" इति ।

छन्दोमञ्जर्यां च—

"त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम्" इति च ।

अब त्रयोदशाक्षरपादवाले वृत्तों में 'प्रहर्षिणी' छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें पहिले तीन (पहिला, दूसरा, और तीसरा) आठवां, दसवां, बारहवां, और तेरहवां अक्षर गुरु हो, तथा ३, और १० अक्षरों पर विश्रामहो, वह सुकवियोंको संमत 'प्रहर्षिणी' नामका छन्द है ।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इसप्रकार है—

जिस छन्दके प्रत्येक पाद में एक मगण, एक नगण, एक जगण, एक रगण, और एक गुरु क्रमसे हों तथा ३ और १० अक्षरों पर विश्रामहो, वह 'प्रहर्षिणी' नामक छन्द है ।

वृत्तरत्नाकर, और छन्दोमञ्जरीके लक्षणोंकाभी यही आशय है ।

उदाहरणभी यही है । जैसे—

```
१  २ ३              ८    १०   १२ १३
ऽ  ऽ ऽ              ऽ    ऽ    ऽ  ऽ
आद्यंचेत् त्रितयमथाष्टमं नवान्त्यं
१   २   ३              ८       १०    १२    १३
ऽ   ऽ   ऽ              ऽ       ऽ     ऽ     ऽ
सोपान्त्यं  गुरु वि   रतौ त   थैव भू   यात् ।
ऽ ऽ ऽ     । ।   ।    । ऽ ।   ऽ । ऽ     ऽ
मगणः      नगणः       जगणः     रगणः     गु०
```

अथ चतुर्दशाक्षरपादवत्सु वृत्तेषु 'वसन्ततिलका' वृत्तलक्षणमाह—

आद्यं द्वितीयमपि चेद्‌ गुरु तच्चतुर्थं
यत्राष्टमं च दशमान्त्यमुपान्त्यमन्त्यम् ।
स्यादक्षरन्तु गुरुतासहितं तदानीं
नाम्ना 'वसन्ततिलकां' किल तां वदन्ति ॥ ३२ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—

"वसन्ततिलका त्भौ जौ गौ" इति ।

वृत्तरत्नाकरे—

"उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः" इति ।

छन्दोमञ्जर्यांश्च—

"ज्ञेयं वसन्ततिलकं तभजा जगौ गः" इति च ।

अब चौदह अक्षरके पादवाले वृत्तोंमें "वसन्ततिलका" छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दके प्रत्येक पादमें पहिला, दूसरा, चौथा, आठवां, ग्यारहवां, तेरहवां, और चौदहवां, अक्षर गुरु हो, उस छन्दको "वसन्ततिलका" कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इस प्रकार है—

जिस छन्दके प्रत्येक चरणमें एक तगण, एक भगण, दो जगण, और दो गुरु क्रमसे हों, वह 'वसन्ततिलका' छन्द है ।

वृत्तरत्नाकर, और छन्दोमञ्जरीके लक्षणोंका भी यही आशय है ।

उदाहरणभी यही है । जैसे—

१ २ ४ ८ ११ १३ १४
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आद्यं द्वितीयमपिचेद्‌ गुरु तच्चतुर्थं

१ २ ४ ८ ११ १३ १४
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
यत्राष्ट मं च द शमान्त्य मुपान्त्य मन्त्यम् ।
ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
तगणः भगणः जगणः जगणः गु० गु०

अथ पञ्चदशाक्षरपादवद्वृत्तेषु "मालिनी" वृत्तलक्षणमाह—

प्रथममगुरु षट्कं विद्यते यत्र वृत्ते

तदनु च दशमं चेदक्षरं द्वादशान्त्यम् ॥
करिभिरथ तुरङ्गैर्यत्र भूयाद्विरामः
सुकविजनमनोज्ञा मालिनी सा प्रसिद्धा ॥ ३३ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—

"मालिनी नौ म्यौय्" इति ।

छन्दोमञ्जरीवृत्तरत्नाकरयोश्च—

"ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः" इति च ।

अब पन्द्रह अक्षरके पादवाले वृत्तोंमें "मालिनी" वृत्तका लक्षण कहते हैं—

जिस वृत्तके प्रत्येक पादमें पहिले छ ६ अक्षर, और उसके बाद दसवां, और तेरहवां अक्षर लघु हो, और बाकी बचे सभी अक्षर गुरु हों, तथा ७, ८ अक्षरों पर विश्राम हो तो उस छन्दको "मालिनी" कहते हैं

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इस प्रकार है—

जिस छंदके प्रत्येक चरणमें दो नगण, एक मगण, दो यगण, क्रमसे हों, उसे "मालिनी" छन्द कहते हैं ।

छन्दोमञ्जरी, और वृत्तरत्नाकरके लक्षणोंका आशय इस प्रकार है—

दो नगण, एक मगण, दो यगण, क्रमसे हों, और ८, ७, अक्षरों पर विश्राम हो, तो वह "मालिनी" छन्द है ।

उदाहरणभी यही है । जैसे—

१ २ ३	४ ५ ६		१०	१३
। । ।	। । ।		।	।
प्रथम	मगुरु	षट्कंवि	द्यते य	त्रवृत्ते
१ २ ३	४ ५ ६		१०	१३
। । ।	। । ।		।	।
तदनु	चदश	मंचेद	क्षरं द्वा	दशान्त्यम् ।
। । ।	। । ।	ऽ ऽ ऽ	। ऽ ऽ	। ऽ ऽ
नगणः	नगणः	मगणः	यगणः	यगणः

अथ सप्तदशाक्षरपादवद्वृत्तेषु "हरिणी" छन्दोलक्षणमाह—

इह हि लघवः पञ्च प्राच्यास्ततो दशमान्तिक-
स्तदनु लघुतायुक्तौ वर्णौ यदि त्रिचतुर्दशौ ॥
प्रभवति पुनर्यत्रोपान्त्याक्षरं लघुताङ्कितं

यतिरपि रसैर्वेदैरश्वैः स्मृता हरिणी हि सा ॥ ३४ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—

"हरिणी न्सौम्रौ स्लौग् ऋतुसमुद्रऋषयः" इति ।

वृत्तरत्नाकरे—

"रसयुगहयैर्न् सौ म्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा" ।

छन्दोमञ्जर्यां च—

"नसमरसलागः षड् वेदैर्हयैर्हरिणी मता" इति च ।

अब सत्रह अक्षरके पादवाले वृत्तोंमें "हरिणी" छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्दके प्रत्येक पादमें पहिले ६ छ अक्षर, ग्यारहवां, तेरहवां, और सोरहवां अक्षर लघु हो, बाकी सब अक्षर गुरु हों, तथा ६, ४, ७ अक्षरों पर विश्राम हो, उस छंदको "मालिनी" छन्द कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इस प्रकार है—

जिस छंदके प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक नगण, एक सगण, एक मगण, एक रगण, एक सगण, एक लघु और एक गुरु हो, और ६, ४, ७ अक्षरों पर विश्राम हो उस छंदको 'हरिणी' कहते है ।

वृत्तरत्नाकर और छन्दोमञ्जरीके लक्षणोंका भी यही आशय है ।

उदाहरणभी यही है । जैसे—

१ २ ३ ४ ५ ११ १३ १
इहहि लघवः पञ्चप्राच्यास्ततो दशमान्तिक-

१ २ ३ ४ ५ ११ १३ १६
स्तदनु लघुता युक्तौ वर्णौ यदि त्रिचतुर्दशौ ॥

। । । । । S S S S S । S । । S । S

नगणः सगणः मगणः रगणः सगणः लं० गु०

अथ 'शिखरिणी' छन्दोलक्षणमाह—

यदा प्राच्यो वर्णो भवति च लघुः षष्ठकपरा-
स्ततो वर्णाः पञ्च प्रकृतिसुभगा हन्त लघवः ॥
त्रयोऽन्ये चोपान्त्यास्तदनु विलसन्त्येव लघवो
रसैरीशैर्यस्यां भवति विरतिः सा शिखरिणी ॥ ३५ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—

"शिखरिणी य्मौ न्सौ भ्लौग् ऋतुरुद्राः" इति ।

छन्दोमञ्जरी वृत्तरत्नाकरयोश्च—

"रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी" इति च ।

अब 'शिखरिणी' छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्द के प्रत्येक चरणमें पहिला, सातवां, आठवां, नववां, दसवां, ग्यारहवां, चौदहवां, पन्द्रहवां और सोलहवां अक्षर लघु हो, और बाकीके सब अक्षर गुरु हों, तथा ६ छ, और ११ ग्यारह अक्षरों पर विराम हो तो उस छन्द को 'शिखरिणी' कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इस प्रकार है—

जिस छंदके प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक यगण, एक मगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण, एक लघु, और एक गुरु हो, तथा ६, और ११ अक्षरोंपर विराम हो, उसे 'शिखरिणी' कहते हैं ।

छन्दोमञ्जरी, और वृत्तरत्नाकरके लक्षणोंका भी आशय पिङ्गलके लक्षणके समान ही है ।

उदाहरणभी यही है । जैसे--

१		७ ८ ९	१० ११	१४ १५	१६
।		। । ।	। ।	। ।	।
यदाप्रा	च्योवर्णो	भवति	च लघुः	षष्ठक	परा–
१		७ ८ ९	१० ११	१४ १५	१६
।		। । ।	। ।	। ।	।
स्ततोव	र्णाःपञ्च	प्रकृति	सुभगा	हन्तल	घवः ।
। ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	। । ।	। । ऽ	ऽ । ।	। ऽ
यगणः	मगणः	नगणः	सगणः	भगणः	ल० गु०

अथ 'पृथ्वी' छन्दोलक्षणमाह—

द्वितीयमपिचाक्षरं यदि षडष्टमं द्वादशं
चतुर्दशमथो भवेद्गुरु तथैव तत्राक्षरम् ।
सपञ्चदशमन्तिमं तदनु यत्र भूयाद्यतिः
करीन्द्रफणभृत्कुलैर्निगदिता नु पृथ्वी हि सा ॥ ३६ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—

"पृथ्वी ज्सौ ज्सौ य्लौ ग् वसुनवकौ" इति ।

छन्दोमञ्जरीवृत्तरत्नाकरयोश्च—

"जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः" इति च ।

अथ 'पृथ्वी' छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छंदके प्रत्येक चरणमें दूसरा, आठवां, बारहवां, चौदहवां, पन्द्रहवां, और अन्तिम अर्थात् सतरहवां अक्षर गुरु हो, तथा आठ ८ और नौ ९ अक्षरों पर विराम हो, उस छन्द को 'पृथ्वी' कहते हैं ।

पिङ्गलसूत्रमें लक्षण इस प्रकार है—

जिस छंदके प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक जगण, एक सगण, एक यगण, एक लघु और एक गुरु हो, तथा ८, आठ और ९ नौं अक्षरों पर विरामहो, उसे 'पृथ्वी' छंद कहते हैं ।

छन्दोमञ्जरी और वृत्तरत्नाकर के लक्षणोंका भी यही आशय है ।

उदाहरणभी यहीहै । जैसे—

२ S	६ S	८ S	१२ S	१४ १५ S S	१७ S
द्वितीय	मपिचा	क्षरंय	दिषड	ष्टमंद्वा	दशं
२ S	६ S	८ S	१२ S	१४ १५ S S	१७ S
चतुर्द	शमथो	भवेद्गु	रुतथै	वतत्रा	क्षरम् ॥
। S ।	। । S	। S ।	। । S	। S S	। S
जगणः	सगणः	जगणः	सगणः	यगणः	ल०गु०

अथैकोनविंशत्यक्षरपादवद्वृत्तेषु 'शार्दूलविक्रीडित' वृत्त-लक्षणमाह—

आद्याश्चेद् गुरवस्त्रयो विरचिताः षष्ठस्तथा चाष्टमः
सन्त्येकादशतस्त्रयस्तदनु चेदष्टादशाद्यान्तिमाः ।
वर्णाश्चेद् विरतिस्तथा हि मुनिभिः सूर्यैश्च यत्रोदिता
तद्वृत्तं प्रवदन्ति काव्यरसिकाः शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ३७ ॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—

"शार्दूलविक्रीडितं म्सौ ज्सौ तौग् आदित्यऋषयः" इति ।

छन्दोमञ्जरीवृत्तरत्नाकरयोश्च—

"सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्" इति च ।

अब उन्नीस अक्षरके चरणवाले वृत्तोंमें 'शार्दूलविक्रीडित' छन्दका लक्षण कहते हैं—

जिस छन्द के प्रत्येक चरणमें पहिले तीन अर्थात् पहिला, दूसरा,

तीसरा, और छठां, और अन्तिम अर्थात् उन्नीसवां अक्षर गुरु हों, परिशेषात् बाकी के सब अक्षर लघु हों, तथा १२, और ७ अक्षरोंपर विराम हो, उस छन्द को काव्यरसिक लोग 'शार्दूल विक्रीडित' कहते हैं।

पिङ्गलसूत्र में लक्षण इस प्रकार है—

जिस छंदके प्रत्येक चरणमें क्रमसे एक मगण, एक जगण, फिर एक सगण, दो तगण और एक गुरु हो, तथा १२, और ७ अक्षरों पर यति हो, उसे 'शार्दूलविक्रीडित' कहते हैं।

छन्दोमञ्जरी और वृत्तरत्नाकर के लक्षणों काभी यही आशय है।

उदाहरणभी यही है। जैसे—

१ २ ३	६	८	१२	१३ १४	१६ १७ १९	
S S S	S	S	S	S S	S S S	
आद्याश्चे	हुरव	स्त्रयो वि	रचिताः	षष्ठस्त	था चाष्टमः	
सन्त्यका	दशात	स्त्रयस्त	दनुचे	दष्टाद	शाद्यान्ति मा:	
S S S	I I S	I S I	I I S	S S I	S S I	S
मगणः	सगणः	जगणः	सगणः	तगणः	तगणः	गु०

अथैकविंशत्यक्षरपादवत्वद्वृत्तेषु 'स्रग्धरा' वृत्तलक्षणमाह—

चत्वारो यत्र वर्णाः प्रथममलघवः षष्ठकः सप्तमोऽपि
द्वौ तद्वत् षोडशाद्यौ गुरुगतिकलितौ षोडशान्त्यौ तथान्त्यौ ॥
वृत्ते यस्मिन् मनोज्ञे मुनिमुनिमुनिभिर्दृश्यते चेद्विरामो
सेयं वन्द्यैः कवीन्द्रैः सपदि निगदिता स्रग्धरेति प्रसिद्धा ॥३८॥

पिङ्गलसूत्रे तल्लक्षणं यथा—

"स्रग्धरा म्रौ भ्नौ यौय् त्रिःसप्तकाः" इति।

वृत्तरत्नाकरे—

"म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्" इति।

छन्दोमञ्जर्यां च—

"म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्" इति च।

अब इक्कीस अक्षरके चरणवाले वृत्तोंमें 'स्रग्धरा' वृत्तका लक्षण कहते हैं—

जिस छंदके प्रत्येक चरणमें पहिले चार, अर्थात् पहिला, दूसरा, तीसरा, और चौथा, तथा, छठा, सातवां, और सोलहवेंके पहिले दो, अर्थात् चौदहवां, और पन्द्रहवां, और उसके अन्त के दो, अर्थात्,

सत्रहवां, और अठारहवां, तथा पाद के अन्तिम दो, अर्थात् बीसवां और इक्कीसवां, ये सब अक्षर गुरु हों, परिशेषात् बाकी बचे हुए सब अक्षर लघु हों, तथा ७,७,७, सात, सात, सात अक्षरों पर यति हो तो उस छंदको कविश्रेष्ठ लोग 'स्रग्धरा' कहते हैं।

पिङ्गलसूत्रका लक्षण इस प्रकार है—

जिस छंदके प्रत्येक पाद में एक मगण, एक रगण, एक भगण, एक नगण, क्रमसे तीन यगण, हों, और सात सात अक्षरों पर विराम हों उसे 'स्रग्धरा' कहते हैं।

छन्दोमञ्जरी और वृत्तरत्नाकरके लक्षणोंकाभी यही आशय है!

उदाहरणभी यही है। जैसे—

१ २ ३	४ ६ ७		१४	१५ १७	१८ २०	२१
S S S	S S S		S	S S	S S	S
चत्वारो	यत्रवर्णाः	प्रथमम	लघवः	षष्ठकः	सप्तमोऽपि	
द्वौतद्वत्	षोडशा	द्यौगुरु	र्गातक	लिनौषो	डशान्त्यौ	तथान्त्यौ।
S S S	S I S	S I I	I I I	I S S	I S S	I S S
मगणः	रगणः	भगणः	नगणः	यगणः	यगणः	यगणः

परीक्ष्यच्छात्रवृन्दानामुपकाराय केवलम्।
कलिता कुतुकादेषा छन्दःकौमुदिका मया॥ १॥
इमामभ्यस्य यत्नेन स्फुटार्थां वृत्तकौमुदीम्।
उत्तरन्तु सुखं छात्राः परीक्षाऽगाधसागरम्॥ २॥
अनेन मम यत्नेन छन्दःसङ्ग्रहरूपिणा।
प्रीणातु सततं देवः पार्वतीवल्लभः स्वयम्॥ ३॥
श्रीगङ्गाधरसद्गुरुप्रतिफलत्सारस्वतज्योतिषः
श्रीरामाङ्घ्रिनिषेवणाप्तसुमतेः सन्तीर्णशास्त्राम्बुधेः।
श्रीमद्भैरवनायकात्मजनुषः सद्धर्मलक्ष्मीजुषः
श्रीनारायणशर्मणः कृतिरियं विद्वन्मुदे जायताम्॥ ४॥

इतिश्रीमत् खिस्तेकुलालङ्करण श्रीमद्भैरवनायकतनूजनि साहित्याचार्य
श्रीनारायणशास्त्रिखिस्तेविरचिता
छन्दःकौमुदी समाप्ता।

श्रीः ।

किरातार्जुनीयम् ।

आदितः सर्गत्रयं यावत्

अस्य यद्यपि बह्वयो व्याख्याः समुपलभ्यन्ते तथापि न तादृगुपकारो दृश्यते ताभिः कोमलमतीनामन्तेवासिनां यादृगस्मिन्निबद्धया "श्रीगङ्गाधरमिश्र" कृतया सुधाऽभिधयाऽभिनवव्याख्यया । कृतमतिप्रशंसनेन, अत्र भवन्त एव सुधाऽवगाहिनः सहृदयपाठकाः प्रमाणं भविष्यन्ति । अत्र च परीक्षाऽर्थिनां विद्यार्थिनामेकान्तस्वान्तसुखाय प्रथमं तावत् कविजन्मकालादिनिर्णायकेनैतिह्येनोपनिबद्धा भूमिका, तदनु विशदं पात्रपरिचयः, सङ्क्षिप्तकथानकञ्च, तथा महामहोपाध्याय "मल्लिनाथ" सूरिविरचितया घण्टापथाख्यव्याख्ययाऽनुबद्धं प्रतिश्लोकम्—अन्वयो, व्याख्या, समासादि, व्याकरणं, वाच्यान्तरं, सारार्थो, भाषाऽर्थश्चेति क्रमेण सन्निवेशितानि सन्ति । अन्ते च शिक्षाऽभ्यासार्हपद्यपद्यांशयोः प्रश्नविशेषस्य च सङ्ग्रहस्तथा च १९१० शततमेशवीयवत्सरादारभ्य १९३० शततमेशवीयवत्सरं यावत् काशीस्थराजकीयसंस्कृतपाठशालीयपरीक्षायाः प्रश्नपत्राण्यपि यत्नतः सङ्गृह्य संस्थापितानि सन्ति । किञ्च—ईदृगुत्तमस्य चित्ताकर्षिगुणजुषोऽस्य सर्वजनसौलभ्यमेवालभ्यलाभं स्वं स्वीकुर्वाणेन मया केवलं १२ आणकमितमेव निर्मञ्छनं निर्दिष्टम् ।

प्रथमपरीक्षोपयोगि—

रघुवंशमहाकाव्यम् ।

अस्यापि सञ्जीविनीसनाथा सुधाऽभिधा व्याख्या किरातार्जुनीयसुधातो नाधस्तनश्रेणीसरणिमनुसरति । अपि तु व्याकरणांशे सुकुमारासुकुमारमतीनां सर्वेषामप्यन्तेवासिनामन्तरज्ञानविषराशिविनाशनेन प्रदर्शितसुधाधवलिमयशोराशिर्हृदयग्राहिणी भूत्वा नातिभूयसा समयेन भवतामक्षिगोचरीभविष्यति । तदानीमेवैतदीयतथ्यातथ्यनिर्णयेऽहमहमिकया मिथो विवदमानाः कुतूहलाक्रान्तस्वान्ताः समन्ततो भवन्त एव प्रमाणत्वेनोपन्यस्ताः सर्वत्र भवन्त्वित्यलमतिजल्पनेनेति शम् ।

मूल्यम् रु० १–८–०.

प्राप्तिस्थानम्—

चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय,

बनारस सिटी ।